Women आवाज़

आधी आबादी की गूँज...

नारी से नारी तक

● श्रीमति शिखा जैन ● डॉ. प्रीति सुराना

www.womenaawaz.com

वुमन आवाज
नारी से नारी तक
(नारी शक्ति के लेखकीय सृजन का साझा संग्रह)

डॉ. प्रीति सुराना
संपादक

शिखा जैन
संकलनकर्ता

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इन्दौर, मध्यप्रदेश

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय : 15, नेहरू चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (मप्र) 481331
शाखा : एस-207, नवीन भवन, इन्दौर प्रेस क्लब परिसर,
इन्दौर (मप्र) 452001
दूरभाष (कार्या.) 07633-253159 (मो.) 9424765259
अणुडाक-antrashabshakti@gmail. com
अंतरताना-www.antrashabshakti. com

मूल्य 120.00 रुपए
आवरण : मृदुल जोशी
मुद्रक-राजा ऑफसेट
मो.-9993340084

वैधानिक चेतावनी

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएं लेखक द्वारा वुमन आवाज को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता...

शास्त्रोक्त निष्कर्ष जिसमें ब्रह्माण्ड की समग्र शक्ति के सम्मान को केंद्रित कर स्त्रीत्व के सम्पूर्ण अभियान का वर्धन किया है। जहां म से माँ, महिला मातृभूमि, मातृभाषा और सृष्टि से समस्त सृजनकर्ताओं का समावेश हो जाता हैं। प्रकृति ने सृष्टि पर सृजन का प्रथम अधिकार भी स्त्री को ही दिया है, कोई पुरुष चाहकर भी इस अधिकार पर अतिक्रमण नहीं कर सकता। शरीर से लेकर शब्द तक कुक्षी के सर्वाधिकार को सहेजकर सृजन को पूर्णता देने के इस कर्तव्य में स्त्रीत्व की गरिमा के लिए 'वुमन आवाज़' ने बीड़ा उठाकर अपने सबसे पहले संग्रह को समर्पित किया है आधी आबादी को।

वर्तमान में समाज केवल स्त्री सशक्तिकरण की बात करता हैं, परन्तु आवश्यकता स्त्री सक्षमीकरण की हैं। घर की चार दिवारी से बाहर भी एक और आसमान हैं, जिसमें स्त्री एक चिड़िया की तरह रोज अपने सपने बुनती हैं और उन सपनों को हकीकत में बदलने की चेष्टा में संघर्ष करती हैं। इसी को लक्ष्य रखकर 'वुमन आवाज़' भी लगातार कार्यरत हैं। रोजगार, शिक्षा, राजनीति, स्वास्थ्य, परिवार, संविधान और अन्य तमाम पहलू पर लगातार नारीत्व के नेतृत्व को सम्मानित कर उनके उत्थान हेतु प्रयत्नशील हैं। नारी के लिए, नारी द्वारा ही इस संस्थान का संचालन हैं।

आधी आबादी की गूंज को पुस्तकबद्ध कर प्रथम प्रयास में ही वसुंधरा की सर्वश्रेष्ठ कोपल के अभिनंदन का गौरव गीत वुमन आवाज़ ने गाने का प्रयास किया हैं। आप सब के हाथों में यह संग्रह अर्पण कर संस्थान अभिभूत हुआ हैं, आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास हैं कि आपको पसंद भी आएगा।

शिखा जैन
संस्थापक

अनुक्रमणिका

1.	वनिता (गीत)	मेघा योगी	06
2.	आधार बिन	राधा गोयल	07
3.	अनमोल उपहार	हेमलता दाधीच	08
4.	चरित्रहीन	शिरीन भावसार	09
5.	नानी (एक बाल कविता)	सरिता नारायण	10
6.	पर मेरी तो रात यहीं है	सुशीला जोशी	11
7.	वजूद	शालिनी खरे	12
8.	मैं उड़ चली...	अंकिता अग्रवाल	13
9.	लौट आया बचपन	श्रीमती राजकुमारी चौकसे	14
10.	इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां	शिखा श्रीवास्तव	15
11.	समान धरातल पर	डॉ. प्रभा मुजुमदार	16
12.	बेटियाँ	श्रीमती अनिता मंदिलवार	17
13.	दहेज कल और आज	नीमा अस्थाना	18
14.	गुरु दक्षिणा	सुमन चौधरी	19
15.	मनोरम छंद	सुनीता काम्बोज	20
16.	दोहे में सर्दी	मंजु गुप्ता	21
17.	एक आंदोलन हो जाए...	कविता नागर	22
18.	नव-सृजन सी बेटियाँ	प्रमिला व्यास	23
19.	ग़ज़ल	रमा वर्मा	24
20.	हिंदी कैसे बने जन-जन की भाषा	रीता अरोड़ा (दिल्ली)	25
21.	जन्नत	शुभ्रा झा	26
22.	फजीहत	रश्मि शुक्ला	27
23.	नारी तुम केवल श्रद्धा हो	प्रतिभा श्रीवास्तव	28
24.	जननी की पीड़ा	नविता जौहरी	29
25.	नाव	डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई	30
26.	राही	कुसुम सिंह	31
27.	हमारी सीमा तय है	सीमा शिवहरे	32
28.	जिन्दगी	डॉ. मीनू पाण्डेय	33

29. मौन (कविता)	डॉ. वर्षा चौबे	34
30. अदृश्य फफोले	पूनम झा	35
31. एसिड अटैक के खिलाफ एक ख्याल	अंशु त्रिपाठी	36
32. महिला जीवन	मीना विवेक जैन	37
33. तुम आबाद रहो, मेरा क्या?	सुधा गोयल	38
34. रसवंती निशा	डॉ. उषाकिरण सोनी	39
35. माँ मुझसे तू बोलना	आयुषी भंडारी	40
36. साइड इफेक्ट	इंजी. आशा शर्मा	41
37. प्यार के फूल	मीनाक्षी सुकुमारन	42
38. नारी सशक्तिकरण	रेखा जोशी	43
39. तैयारी नए साल की	श्रीमती ज्ञान्तीसिंह	44
40. अंतर	कविता वर्मा	45
41. महिला सक्षमीकरण	माधुरी मिश्रा	46
42. आज दिल की हर बात कहां हैं	अंजली खेर	47
43. मैं हूँ नीर से जन्मी नारी	नीरजा मेहता 'कमलिनी'	48
44. माँ	पिंकी पारुथी 'अनामिका'	49
45. प्रेम गिरह	अर्विना गहलोत	50
46. स्त्रीत्व	डॉ. नीना छिब्बर	51
47. बेटी घर की फुलवारी	डॉ. दीप्ति गौड़	52
48. सूना जीवन	आरती प्रियदर्शिनी	53
49. तार होते रिश्ते	डॉ. लता अग्रवाल	54
50. औरत	आभा सिंह	55
51. भारतीय नारी की दशा	सुश्री रमादेवी तेकाम	56
52. जश्न आजादी	पूनम आनंद	57
53. महिला दिवस	कीर्ति प्रदीप वर्मा	58
54. तू कुछ खुदा सा है	अर्पणा संत सिंह	59
55. मक्कारियाँ नहीं पूजी जाती कहीं	रागिनी शर्मा	60
56. बाल विवाह अभिशाप है	बीना शर्मा	61
57. माँ नर्मदा	प्रज्ञा जायसवाल	62
58. प्रार्थना	अदिति रुसिया	63

मेघा योगी

साहित्यिक उपनाम-मेघा
जन्मतिथि-08/06/1990
जन्म स्थान-अशोक नगर

वर्तमान पता
सोनी कॉलोनी, शिमला गार्डन के पास, गुना मप्र

मोबाइल/व्हाट्सएप
8319584113

शिक्षा
Bsc biotechnology,PGDCA

कार्यक्षेत्र
विद्यार्थी

विधा
गीत, गजल, मुक्तक, छंद, लेख, कहानी आदि

प्रकाशन
गुंजन साझा गजल संग्रह, लोकजंग सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन

सम्मान
अंतरा शब्दशक्ति सम्मान
जिज्ञासा अलंकरण

लेखन का उद्देश्य
आत्म संतुष्टि व हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार

वनिता (गीत)

आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
बनकर बिटिया घर-आंगन जो मधुबन सा महकाती
बहना बनकर कर्तव्यों का बोध हमें करवाती
सह कर प्रसव वेदना भारी माता वो कहलाती
बने संगिनी तो जीवन का अलंकार बन जाती
नारी मन से बहे निरंतर विमल नेह सरिता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
परम्परा के दुर्गम पथ पर चलती है वो प्रतिपल
इतनी सरला प्राण दायिनी हो जैसे पावन जल
नतमस्तक नारी के आगे धरती अम्बर का तल
नारी के धीरज में मिलता हर कठिनाई का हल
त्याग समर्पण दया प्रेम की है पावन संहिता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
नारी का अपमान न करना निश्चित होगा विनाश
कौरव कुल की दुर्गति देखो कैसा हुआ इतिहास
पथ की बाधा मत बनना तुम चूमने दो आकाश
दोनों कुल का मान बढ़ेगा मन में रखो विश्वास
क्षमता नहीं इतनी जो लिखूं नारी पर कविता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।

राधा गोयल

साहित्यिक उपनाम-राधा गोयल
जन्मतिथि- 03/08/1948
जन्म स्थान- दिल्ली

वर्तमान पता
एफ-420, विकासपुरी, नई दिल्ली
मोबाइल/व्हाट्सएप
9811599770
शिक्षा
बीए, बीएड
कार्यक्षेत्र
सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त, गृहिणी
विधा
विधा की खास जानकारी नहीं है। बस मन के भावों को शब्दों में पिरो देती हूँ।
प्रकाशन
अनुबंध सांझा संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान
मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा 'भाषासारथी सम्मान', अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018
लेखन का उद्देश्य
मन के सुकून के लिए व समाज में सार्थक बदलाव के लिए।

आधार बिन

खो गई है जिन्दगी आधार बिन,
एक बच्चा मर गया आधार बिन।

चार दिन से नहीं जला चूल्हा वहाँ,
नहीं मिला राशन वहाँ आधार बिन।

प्रसव पीड़ा से तड़पती ही रही,
दाखिला मिल पाया न आधार बिन।

घुस गए हैं आतंकी आधार बिन,
लूट खाया देश को आधार बिन।

बस गए कितने यहाँ आधार बिन,
मिट गए कितने यहाँ आधार बिन।

कैसा है ये फलसफा आधार का,
बन गया आधार ही आधार बिन।

हेमलता दाधीच

जन्मतिथि- 4 फरवरी
जन्म स्थान- डीकेन (मप्र)

वर्तमान पता
47, नाइयों की तलाई, सती साधना मंदिर उदयपुर (राज.) 313001

शिक्षा
एमए (हिन्दी, राजस्थानी, शिक्षा), एमएड, एम लिब.

कार्यक्षेत्र
पुस्तकालयाध्यक्षा उमरडा, उदयपुर

विधा
हिंदी एवं राजस्थानी में कविता, गीत, कहानी, लेख, संस्मरण, नाटक, एकांकी...

मोबाइल/व्हाट्स एप
9529794726

प्रकाशन
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में

सम्मान
कला श्रृंखला सृजन मंच द्वारा 2006

लेखन का उद्देश्य
वर्तमान सामाजिक कुरीतियों को मिटा भावी पीढ़ी को संस्कृति, संस्कारों से जोड़ना...

अनमोल उपहार

लेते ही जन्म लक्ष्मी कहलाती हो
नौ वर्ष तक नवरात्रि में पूजी जाती हो,
हुई तनिक बड़ी
भईया की सहचरी बन जाती हो,
करता है वो शरारतें
मां-बापू से उसे छुपाती हो,
छुड़ाते ही बचपन का साथ
यौवन होले से थाम लेता हाथ,
यब तुम कली से फूल बन जाती हो,
अपनी खुशबू से सारा जग महकाती हो,
जल, थल, नभ चहुंओर
अपनी छाप छोड़ जाती हो,
कतरा-कतरा देकर देश के नाम
''प्रियदर्शिनी'' बन जाती हो,
अपने बुलंद हौंसलों, अन्याय से टकराती
अपनी किरणों की रोशनी फैलाती
''किरण बेदी'' कहलाती हो,
कभी कल्पनाओं में खोकर चांद-तारों संग खेलती
''कल्पना चावला'' बन जाती हो,
बन कर निडर सागर की गहराइयों को नापती
''जलपरी'' कहलाती हो,
पहाड़ों को मात देती
ऊंचाइयों को नाप लेती
भारत मां का झंडा लहराती
''बछेंद्री पाल'' कहलाती हो,
हवा को मात देती, पानी को नाप लेती
संघर्षों को जीत लेती, देकर खुशी गमों को पी लेती
तुम्हीं से नर, तुम्हीं से घर
तुम बिन सुनी हर डगर,
तुम ममता, तुम दया, तुम करुणा, तुम क्रोध
तुम्हीं शक्ति बनकर सृष्टि को चलाती हो,
तुम विधाता का अनमोल उपहार कहलाती हो।

शिरीन भावसार

जन्मतिथि- नवंबर 1975
जन्म स्थान- इन्दौर (मप्र)

■ **वर्तमान पता**
76 आरआर एवेन्यू, तुलसीनगर, निपानिया रोड, बॉम्बे हॉस्पिटल इन्दौर

■ **शिक्षा**
स्नातकोत्तर (वनस्पति विज्ञान)

■ **कार्यक्षेत्र**
लेखन, कला एवं शिल्प।

■ **विधा**
नई कविताएं, छंदमुक्त कविताएं, गज़ल, मुक्तक, कला, रुबाई, रेखती, संस्मरण, लघुकथा।

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**
9977705749

■ **अणुडाक (ई-मेल)**
shirinbhavsar@gmail.com

■ **प्रकाशन-स्पंदन (सांझा संग्रह)**
matrubhasha.com
hindipratilipi. com
antrashabdshakti.com
समाचार पत्रों में रचनाएं प्रकाशित

■ **सम्मान**
अंतरा-शब्दशक्ति सम्मान 2018

■ **लेखन का उद्देश्य**
अपने विचारों को दृढ़ता से रखना, सामाजिक मुद्दों को उठाना, मनोभावी को अभिव्यक्ति एवं आत्म संतुष्टि।

चरित्रहीन

हाँ... मैं चरित्रवान हूँ
क्योंकि मैं नहीं कहती कुछ भी
जब, मुझे देख कोई आँख दबा सिटी बजाता है
फिकरे कसता है, भद्दे इशारे करता है...
तब... मैं आँखे झुकाएं दुपट्टा सम्भाले
आगे बढ़ जाती हूँ...
हाँ... मैं चरित्रवान हूँ
क्योंकि मैं नहीं कहती कुछ भी
जब... कोई राह चलते दुपट्टा खिंचता हैं
अंजान बन मुझे छू कर निकल जाता है...
तब... मैं संकुचाती हुई अपराधिनी सी
आगे बढ़ जाती हूँ...
हाँ... मैं चरित्रवान हूँ
क्योंकि मैं नहीं कहती कुछ भी
जब... मेरे अपने ही मेरे शरीर को मापते हैं
डरा-धमका कर अकेलेपन का फायदा उठाते है
मैं निर्वस्त्र हुई रिश्तों का मान रखतीं
आगे बढ़ जाती हूँ...
क्यों... चुप रहना
स्त्री के चरित्रवान होने का प्रमाणपत्र है...???
किन्तु अब नहीं...
लड़ूंगी मैं, खड़ी रहूंगी मैं, स्वयं के लिए...
मैं रद्द करती हूँ ऐसे प्रमाणपत्र को...
ऐसी कुंठित, लज्जित चरित्रवानता को...
हाँ... स्वीकार हैं मुझे...
अपने आत्मसम्मान और रक्षा के लिए
मुझे तथाकथित चरित्रहीन हो जाना
क्योंकि
अब चुप रहना स्वीकार नहीं...।

सरिता नारायण

साहित्यिक उपनाम-सरि

जन्मतिथि- 24/11/1956

जन्म स्थान- पटना, बिहार

■ **वर्तमान पता**

Villa no -32, Ivy villas , lane -c
Ivy estate Wagholi,
पुणे (महाराष्ट्र)-412207

■ **शिक्षा**

MBBS, DGO, FIGO

■ **कार्यक्षेत्र**

चिकित्सा

■ **विधा**

स्वतंत्र

■ **मोबाइल**

8805212929, 9167070848

■ **प्रकाशन**

एकल काव्य संग्रह-अनुगूंज

■ **सम्मान**

शब्द सुगंध सम्मान-भाषा भागीरथ सम्मान

■ **लेखन का उद्देश्य**

आत्म संतुष्टि

नानी

(एक बाल कविता)

दूर कहीं एक आँगन,
आँगन में तुलसीचौरा,
वही कहीं थी नानी,
मन्द मन्द मुस्काई।।
हमने कितनी की शैतानी,
नानी कभी बुरा न मानी,
उल्टा माँ को ही डाँट पिलाई
हमने हँसकर ताली बजाई।।
माँ ने हमें गूरेरा,
नानी मन्द मन्द मुस्कायी,
अपने पल्लू में,
हम सब को लपेटा।।
माँ की एक न चल पाई,
नानी ने उन्हें चपत लगाई,
नानी क्यूँ हो गयी पराई??
नानी क्यूँ हो गयी पराई??
दूर कहीं ईक आँगन,
आँगन में तुलसी चौरा,
दूर कहीं, बैठी नानी,
मन्द-मन्द मुस्काई।।

सुशीला जोशी

जन्मतिथि- 5 सितम्बर 1942

■ **वर्तमान पता**

948/3, योगेंद्र पुरी, रामपुरम गेट
मुजफ्फरनगर-251001 (उत्तरप्रदेश)

■ **शिक्षा**

एमए (हिंदी, अंग्रेजी) बीएड, संगीत प्रभाकर-सितार, तबला, कथक, गायन (प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद)

■ **कार्यक्षेत्र**

शिक्षण

■ **व्हाट्स एप**

9719260777

■ **प्रकाशन**

कसैले पात, मुट्ठी भर उजाला, अनुभूति के पंख (सभी नई कविता संग्रह) अधूरी परते (जीवन संस्मरण), फटे पन्ने, हाशिये पर (कहानी संग्रह)

■ **सम्मान**

अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन आयोजित दूसरे अधिवेशन-बंगलौर में कर्नाटक के पदस्थ महामहिम राज्यपाल श्री डी.एन. चतुर्वेदी सम्मानित (2006), कृषि एवं औद्योगिक प्रदर्शनी कवि सम्मेलन में जिलाधिकारी द्वारा सम्मानित (2006), उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य संस्थान लखनऊ द्वारा-अधूरी परत पर ''अज्ञेय'' पुरस्कार (2009), अखिल भारतीय साहित्य कला मंच द्वारा-''काव्य श्री'' की उपाधि प्रशस्ति पत्र सहित सम्मानित (2009) अर्णव कलश द्वारा सम्मान--डॉ. कमलेश भट्ट पुरस्कार-हायकू लेखन-हायकूकार, रामचरण गुप्त सम्मान, लघुकथा, मुंशी प्रेमचंद सम्मान-कहानी, राहुल सांकृत्यायन सम्मान-संस्मरण, जय शंकर प्रसाद सम्मान-एकांकी, काका हाथरसी सम्मान-व्यंग, प्रताप नारायण सम्मान-निबंध, बालकृष्ण भट्ट सम्मान-साक्षात्कार, गिरधर कविराय सम्मान-कुण्डलिना

गीत

पर मेरी तो रात यहीं है

तुमको जाना दूर बहुत है
पर मेरी तो रात यहीं है।।

तुम क्या जानो हमने कितने
झंझा के पंखों को नोचा
चक्रवात में फंसकर हमने
खुद पर कैसे मौन उलीचा
तुम्हार मन क्रूर बहुत है
पर मेरी तो रात यहीं है।।

दोपहरी में खिला फूल सा
झंझावात में उड़ी धूल से
उर्मि से विक्षत दुकूल सा
मरुथल में जीता बबूल सा
तुम्हारा मन मजबूर बहुत है
पर मेरे हर साथ यहीं है।।

सागर से अम्बर तक चलते
मुट्ठी में तुम बून्द समेटे
प्रतिध्वनि सस्मित में फूटी
चंपई चंपई धूप लपेटे
तुम्हारी हठ भरपूर बहुत है
पर मेरी प्रभात यहीं है।।

शालिनी खरे

जन्मतिथि- 3/4/1974

जन्म स्थान- भोपाल (मप्र)

■ **वर्तमान पता**

155, ओमशिव नगर, नयापुरा, एयरपोर्ट रोड, लालघाटी भोपाल (462030 (मप्र)

■ **शिक्षा**

एमए (हिन्दी साहित्य)

■ **विधा**

कविता/लेख/लघुकथा/बालसाहित्य/कहानी

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**

8962706317

■ **प्रसारण**

आकाशवाणी, भोपाल

■ **प्रकाशन**

प्रथम काव्य संग्रह ''चाँदी के मोती''

विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित

■ **सम्मान**

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) द्वारा ''डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान-2017'' हिन्दी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा'' साहित्य गौरव सम्मान-2017, हिन्दी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा पाण्डुलिपि पुरस्कृत

■ **लेखन का उद्देश्य**

अपने आसपास मैंने जो कुछ भी देखा, समझा उसे ही शब्दों के माध्यम से उकेरने का प्रयास करती हूँ अपनी लेखनी द्वारा कुछ अच्छा करने की कोशिश रहती हैं।

''वजूद''

आज जब ढूँढा
वजूद अपना
उठ रहे हैं कई सवाल
मिटा दिया जब खुद को
सब थे मौन
ये सब थे कौन?
कहने को तो थे
ये अपने
चाहा कुछ कहना तो
दिला दिये याद
मर्यादा, संस्कार, परम्पराएं
सोचा छू लूं आसमां
पर वहां भी
गीद्व हैं खड़े
धर दबोचने को
ना घर, ना बाहर
कहाँ हूँ महफूज
हृदय में उठते कई भाव
फिर भी
नहीं तोड़ पाई
ममता और प्यार का
वो मोह जाल।।

अंकिता अग्रवाल

जन्मतिथि- 18/5/1990
जन्म स्थान- बरेली

■ **वर्तमान पता**
फ्लैट नं. 508-ए, एसके ए ग्रीन मेंशन, सेक्टर-12, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, 203207, निकट एक मूर्ति चौक
राज्य-उत्तर प्रदेश

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**
9557229660

■ **शिक्षा**
एमए, नेट, रिसर्च स्कालर (फाइन आर्ट)

■ **कार्यक्षेत्र**
शिक्षा

■ **विधा**
कविता

■ **प्रकाशन**
हिंदी सागर साहित्य पत्रिका में 2 कविताएँ प्रकाशित

■ **सम्मान**
श्रेष्ठ नवोदित रचनाकार सम्मान

■ **लेखन का उद्देश्य**
स्वविचारों को समाज सम्मुख रखना

मैं उड़ चली...

मैं उड़ चली इन हवाओं में,
मैं बह चली इन फिजाओं में,
कहाँ से कहाँ पहुँच गयी
बस चलती गयी
चलती गयी...।
न ठहरी,
न सहमी,
बस बहती गयी
बहती गयी...।
पता नहीं कैसी कशिश है
इन हवाओं में,
इन फिजाओं में,
लगती है जो कुछ अपनी सी...।
न कुछ समझा,
न कुछ जाना,
बस मैं उड़ चली
बस मैं बह चली...।
मैं उड़ चली...।।

श्रीमती राजकुमारी चौकसे

साहित्यिक उपनाम-''प्रेरणा''
जन्मतिथि-30/12/1963
जन्म स्थान- ग्राम रायपुर
जिला-होशंगाबाद (मप्र)

■ **वर्तमान पता**
128 कल्पना नगर रायसेन रोड भेल भोपाल (मप्र)

■ **शिक्षा**
बीए (ग्रेजुएट)

■ **कार्यक्षेत्र**
लेखिका समाज सेविका, ग्रहणी, सह संचालिका

■ **विधा**
लेख, कविता, व्यंग्य काव्य, बाल कहानी

■ **मोबाइल**
9425012228

■ **ई-मेल**
rajkumarichowksey30@gmail.com

■ **सम्मान**
(1) निर्दलीय प्रकाशन भोपाल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार अलंकरण पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह के कर-कमलों द्वारा 3 जुलाई 2016 (2) वरिष्ठ नागरिक मंच कल्चुरी समाज द्वारा सम्मानित किया गया 7 अगस्त 2016 पर स्वर्गीय श्रीमती सरोज चौधरी समाज सेवा सम्मान

■ **लेखन का उद्देश्य**
भारतीय संस्कृति का विकास, साहित्य के प्रति लगाव

''लौट आया बचपन''

नन्हीं पोती संग खेल मैं बच्चा बन जाती हूँ
बच्चा बन दो पल में ही जीवन में रंग भर लाती हूँ।
उसकी मासूमियत पे मन के बंद द्वार खोल आती हूँ।
कुछ दिल की कह लेती हूँ, कुछ उसकी सुन लेती हूँ।
नन्हीं पोती संग खेल ना जाने कब मैं बच्चा बन जाती हूँ।
स्कूल में जो पाया, बाबूल ने जो समझाया, माँ की
ममता ने जो लुटाया, वहीं प्यार मैं पाती हूँ,
अनमोल पलों के बीच मैं न जाने कब बच्चा बन जाती हूँ।
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।
हँस लेती हूँ, हँसाती हूँ, सारे गमों को भूल जाती हूँ।
पढ़ाने उसे बैठती हूँ, कुछ उससे ही सीख जाती हूँ,
जीवन की बगिया में फूल सी खिल जाती हूँ
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।
मासूमियत पर उसके, मन के बंद द्वार खोल आती हूँ।
मन में ईर्ष्या है, न द्वेष है, कपट है न बुराई है,
एक पल में रुठ जाती हैं, एक पल में मान जाती है।
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।
सखियों संग माँ के आँगन में गुड्डा-गुडिया खेल आती हूँ,
बचपन की अठखेलियों में खो जाती हूँ,
पीहर की गलियों में घूम आती हूँ, आम की बच्ची
कैरी तोड़ लाती हूँ।
नन्हीं पोती संग खेलकर न जाने कब मैं बच्चा बन जाती हूँ

शिखा श्रीवास्तव

साहित्यिक उपनाम-शिखा अनुराग
जन्मतिथि-13 अप्रैल 1987
जन्म स्थान-हाजीपुर

■ **वर्तमान पता**
शिखा श्रीवास्तवस के. एन. मिश्रा मिसिर गोंडा शिव मंदिर के पास, कांके रोड, रांची-834001 झारखंड

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**
7979984241

■ **शिक्षा**
स्नातक (प्रतिष्ठा), विषय-समाजशास्त्र

■ **कार्यक्षेत्र**
स्वयं का व्यवसाय 'अनुशी कमर्शियल'

■ **लेखन का उद्देश्य**
समाज में जागरुकता लाने की एक छोटी सी कोशिश करना अपनी लेखनी के माध्यम से

इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां

हम है इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां।
आज भी डरतीं है हम
घिरते ही अंधेरा घर से निकलने में,
आज भी नहीं जुटा पाती हिम्मत
भीड़ पर भरोसा करने की।
अपराधी महसूस करती है खुद को ही, जब
भीड़ में कहीं कोई निगाह करती है परेशान हमें।
सहम-सिमट जाती है खुद में ही,
जब गुजरता है कोई अजनबी स्पर्श हमसे।
हम है इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां।
मनाती है महिला दिवस, लगाती है चंद नारे,
मिलकर दोहरे चेहरे वाले इस समाज के साथ।
हो लेतीं है खुश अपनी इस खास उपलब्धि पर,
अगले दिन से होता है फिर लेकिन
वही ढाक के तीन पात।
वही दहेज के लिए जलाना,
तो कहीं गर्भ में ही अस्तित्व मिटाना।
कहीं लुटती अस्मिता हमारी,
कहीं है लगते सपनों पर पहरे।
पर नहीं है दोष इसमें सिर्फ पुरुष का,
दोषी है हम सब खुद भी।
रहकर मौन दिया आज तक जो उनका साथ,
तो कैसे पाए अपना उचित दर्जा हम आज।

डॉ. प्रभा मुजुमदार

जन्मतिथि- 10.04.57

जन्म स्थान- इन्दौर (मप्र)

■ **वर्तमान पता**

एच-7-1 ओएनजी सी कॉलोनी बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा पूर्व, मुम्बई-400051

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप :** 09969221570

■ **शिक्षा**

एमएससी (गणित), पीएचडी (गणित)-REC (NIT)

■ **कार्यक्षेत्र**

तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग में भूवैज्ञानिक के तौर पर 35 वर्ष कार्यकाल उप महाप्रबंधक (तेलाशय) के पद से मई 2017 से सेवानिवृत्त देश के अलग-अलग क्षेत्र (देहरादून, अहमदाबाद, मुम्बई, असम, मेहसाना) आदि में नियुक्ति रही व सेवानिवृत्ति के बाद वंचित एवं गरीब बच्चों की पढ़ाई में योगदान

■ **विधा :** कविता लेखन

■ **प्रकाशन**

3 कविता संग्रह 'अपने-अपने आकाश' (2003), 'तलाशती हूँ जमीन' (2010) एवं 'अपने हस्तिनापुरों में (2014) प्रकाशित, समकालीन भारतीय साहित्य, नवनीत, वागर्थ, अक्षरपर्व आदि साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशन। पुस्तक मेलों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियां आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के अलावा साहित्य अकादमी बंगलूर में कविता पाठ।

■ **सम्मान**

अनेक स्थानीय (स्कूल, अंतर्महाविद्यालय, कॉलेज, ऑफिस) स्तर के अलावा गुजरात साहित्य परिषद द्वारा पुरस्कृत,
शब्द निष्ठा (अजमेर) तथा सृजनगाथा सम्मान

समान धरातल पर

राम घर चल
बहुत थक गया है थोड़ा आराम कर
सुबह अखबार पूरा नहीं पढ़ा
टी.वी. इत्मीनान से नहीं देखा
फोन पर गप्पे नहीं मारी.
बड़े दिनों से दोस्ताँ को घर नहीं बुलाया.
ऑफिस का बड़ा टेंशन होता है
थोड़ा सा चेंज चाहिए.
नेट पर सर्फिंग कर
एसएमएस पर जोक्स फार्वर्ड कर.
गर्म चाय की चुस्किया पकोड़ों के साथ ले.
टीवी पर सुन्दर बालाओं को देख
पत्नी की झिक झिक पर
ध्यान मत दे बड़बड़ाती रहती है.
आँख मूंद पड़ा रह
तू धरती पर सर्वश्रेष्ठ प्राणी है
इसका अनुभव कर.

रमा घर जा
बच्चे बाट जोह रहे है.
घर पर चाय का इंतजार हो रहा है.
महरी काम पर नहीं आयी
सब बिखरा बिखरा है.
बच्चों का होमवर्क अधूरा है
उसे पूरा कराना है.
जल्दी घर समेट बढ़िया नाश्ता बना.
जल्दी-जल्दी हाथ चला
बहुत काम बाकी है.
आराम का नाम मत ले
ये हराम होता है.
अपनी बीमारी पर छुट्टियां मत ले.
घर पर मेहमान आते है
तीज-त्योहार बच्चों के इम्तिहान होते है
ऊंची आवाज मत कर
किसी से अपेक्षा मत रख
फूर्ति से काम समेट सुबह जल्दी उठना है...

श्रीमती अनिता मंदिलवार

साहित्यिक उपनाम-''सपना''
जन्मतिथि- 04 फरवरी
जन्म स्थान- बिहार शरीफ (नालन्दा)

■ **वर्तमान पता**
जरहागढ़ शिव मंदिर के पास अंबिकापुर सरगुजा छग

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप :** 09826519494

■ **शिक्षा**
स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य) बीएड, पीजीडीसीए

■ **कार्यक्षेत्र :** व्याख्याता

■ **विधा :** गद्य एवं पद्य

■ **प्रकाशन :** साझा संकलन
1. हाइकु की सुगंध 2. काव्य अमृत 3. हिन्दी सागर पत्रिका 4. मातृभाषा 5. ग़ज़ल संग्रह-गुंजन 6. कथा संकलन-कथा सेतु तथा नवभारत दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र, स्वर मंजरी, सत्य ज्ञान समागम, व्यंजना में कविताओं में व लेख का प्रकाशन।

■ **सम्मान**
1. काव्य अमृत सम्मान 2. हिन्दी सागर सम्मान 3. दोहा शतकवीर सम्मान 4. हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान 5. दोहा शतकवीर कलम की सुगंध सम्मान-2018 6. अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 7. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान 2017, 8. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा बाबू बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान 2017

■ **लेखन का उद्देश्य**
अपने भावों को पन्ने पर उतारना साथ ही समाज में जागरुकता के लिए लेखन करना

बेटियाँ

बेटियाँ होती हैं किताब की तरह,
माँ कहती है हो हिसाब की तरह।
अब उसे उड़ने दो आसमान में,
चमकेगी वह आफताब की तरह।
तम से निकलकर उजाले की ओर
बादलों से निकल माहताब की तरह।
रोको नहीं, नदी बनकर बहने दो,
भावनाएँ बहेगी सैलाब की तरह।
कठिन सवाल जीवन का जब भी हो,
हल कर देगी सही जवाब की तरह।
हर लम्हा तारीख बने उसका अब,
ज़िन्दगी जिए लाजवाब की तरह।
बेटियाँ दो कुलों की रौनक ''सपना''
सम्मान तो उसे खिताब की तरह।

नीमा अस्थाना

वर्तमान पता- 117 कल्पना नगर रायसेन रोड, भोपाल

मोबाइल-9826924186

दहेज कल और आज

शाम का 6 बजे थे। मैं पार्किंग से गाड़ी निकाल रही थी। गार्ड मेरी गाड़ी निकालने में मदद कर रहा था, तभी उसके मोबाइल की रिंग बजी। गार्ड बोला मैडम मेरी बेटी पांच-छह बार फोन करके पूछ रही है। आप घर कब आओगे। मैं उससे बार-बार कह रहा हूँ बेटी मैं रात में ग्यारह बजे आऊँगा मैडम में रात में घर पहुँचुंगा। वह जागती मिलेगी। मेरी उसे बहुत चिंता रहती है। बेटी का पिता से कुछ ज्यादा ही स्नेह होता है। बेटे का मां से। हां-हां क्यों नहीं बेटियों से ही तो घर की रौनक है।

घर आने पर अचानक एक खबर पढ़ी दहेजलोभी दुल्हे को दुल्हन ने बारात समेत वापिस लौटाया। घर में सभी लड़की की तारीफ कर रहे थे। मीडिया तारीफ के पूल बांध रहा था। क्या इस दहेज की परंपरा को हमने ही बढ़ावा नहीं दिया है। जब स्वयं को उच्च पद पर आसीन, ज्यादा कमाने वाला लड़का दिखता है तो लड़के को मुंहमांगे दाम देकर खरीदने लग जाते हैं, क्योंकि इसमें स्वयं का स्वार्थ नीहित हैं। लोग जीवन के मकसद से भटक जाते है। हर दिन कुछ न कुछ हम मांगते रहते हैं। इच्छाए बढ़ती जाती है।

यदि पीछे खंगाला जाए तो स्वयं का कल ही आज बन कर सवाल करता है। कही आप संवेदनाहीन होकर सिर्फ दहेज और स्टेटस के तराजू में कितनी लड़कियों को विवाह के लिए अयोग्य ठहरा देते हो। किसी मध्यम वर्ग के पिता की पगड़ी उछालते हो।

उस पिता की जगह पर परिस्थिति आज स्वयं को ले आई, तब पता चलता है रिश्ते क्या होते हैं भावना क्या होती है। रिश्ते ऊपर से बनते हैं इन्हें बिगाड़ा और संभालना व्यक्ति पर निर्भर है।

दहेज के कारण अनेक पढ़ी-लिखी लड़कियां अविवाहित, रह जाती है या बेमेल विवाह और अत्याचार सहती है। बेटी किसी की भी हो पिता का अभिमान होती है, गौरव होती है। इसलिए समाज की परवरिश कुछ ऐसी होनी चाहिए कि बिना किसी की भावना को ठेस पहुंचाए विवाह जैसा मंगलकार्य सम्पन्न हो। एक तरफ लड़कियों की आत्मनिर्भरता की बातें की जाती है, दूसरी तरफ दहेज की बैसाखी क्यों।

जीवन पल-पल बदल रहा है। आप अगर बदलाव के प्रति सतर्क और जागरुक है तो आप का जीवन गुणवत्तापूर्ण होगा। अपने अनुभवों के जरिए वह सबकुछ सीखना चाहिए, जो आपका विकास करें। आपका लक्ष्य होना चाहिए कि आप संसार से निर्वाण या बंधन से मुक्ति के ओर बढ़े इस यात्रा में आगे बढ़ने के लिए आत्म-समर्पण और खुद को स्मृति में रखना होगा। बचपन में हमारे भीतर डर नहीं होते हैं। बड़े ही हमारे भीतर डर पैदा करते हैं।

सुमन चौधरी

साहित्यिक उपनाम-''सुमन''
जन्मतिथि- 3/7/1960
जन्म स्थान- बागपत-उ.प्रदेश

■ **वर्तमान पता**

सुमन चौधरी C/o डॉ. अशोक चौधरी, पारिजात, शिवपुरी लेन सिविल लाइंस लाइन बिजनौर उत्तरप्रदेश

■ **मोबाइल :** 09412855939

■ **शिक्षा**

पीजी डिप्लोमा इन मास कम्युनिकेशन, स्नातक मनोविज्ञान, एमए

■ **संप्रति**

स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता

■ **विधा :** कहानी,कविता,व्यंग,लेख,संस्मरण।

■ **प्रकाशन**

विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का नियमित प्रकाशन, ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी से कहानी, कविता एवं वार्ता का नियमित प्रसारण, परिचर्चा एवं सेमिनारों में सहभागिता।

प्रकाशित पुस्तक-''नेता टिकट और गिरगिट (व्यंग संग्रह) चाय पानी जिंदाबाद-(व्यंग संग्रह)

■ **सम्मान**

साहित्यिक एवं समाज सेवार्थ महिला सशक्तिकरण अवार्ड 2007-08 (अखिल भारतीय राजीव गांधी मंच द्वारा प्रदत्त) साहित्यिक सम्मान-नाट्य दीप सांस्कृतिक संस्था बिजनौर (2015-16) सहित अनेक सामाजिक सम्मान

■ **लेखन का उद्देश्य**

महिला सशक्तिकरण की ओर कदम बढ़ाते हुए, आत्मसंतुष्टि के साथ एक साहित्यकार के दायित्व का वहन

लघु कथा

गुरु दक्षिणा

''मां मुझे भी स्कूल जाना है पढ़ लिखकर बड़ा ऑफिसर बनना है''-नन्ही पूजा ने मां का आंचल खींचते हुए कहा तो उसकी रोज-रोज की इस जिद से तंग आकर माँ ने लगभग उसे धकियाते हुए कहा कि-''एक तो तू लड़की जात, ऊपर से हम गरीब लोग ठहरे, फिर स्कूल का खर्चा कौन उठाएगा? और तेरे स्कूल जाने से मेरे कामकाज में हाथ कौन बटाएँगा? इसलिए बेकार की बातें छोड़ और जल्दी-जल्दी बर्तन माँजकर, झाड़ू पोछे में मेरी मदद कर तो पूजा रुआसी सी काम में लग गई पर उसके मन में ''स्कूल-स्कूल'' एक ही शब्द गूँज रहा था। ''मैडमजी कॉफी पी लीजिए'' आर्दली ने कहा तो उसकी तंद्रा टूटी और वह कॉफी पीकर ऑफिस का काम निपटाने लगी, काम खत्म होते ही वह पुनः सोचने लगी कि स्कूल को लेकर अक्सर माँ से खींचतान चलती ही रहती थी कि एक दिन कहा-सुनी के बीच में सरिताजी आ गई, उन्होंने मां को समझाया-''शिक्षा तरक्की का द्वार है, बेटी यदि पढ़ना चाहती है तो उसे पढ़ाओ'' पर मां ने कहा कि ये लड़की है, इसके लिए घर के कामकाज ही ठीक हैं, जहाँ स्कूल जाने से खर्चा होगा, वहीं मेरे काम का नुकसान भी... हमारी बिरादरी में तो ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की की शादी के लिए लड़का भी नहीं मिलेगा। ''... तो सरिताजी ने बमुश्किल मां को मनाया और कहा कि पूजा की पढ़ाई का खर्चा वह देगी, पूजा सुबह-शाम काम करेगी और स्कूल भी जाएगी तो यहीं से पूजा का नया सफर शुरू हुआ और वह सरिताजी को आंटी की जगह गुरु माँ कहने लगी।

सरिताजी की शुभकामनाएँ, उसका जनून और उसकी मेहनत रंग लाई और आखिरकार उसका चयन पी.सी.एस. के लिए हो गया, तब उसने भावुकतावश उनके हाथ थामकर कहा-गुरु माँ, आपको गुरु दक्षिणा में क्या दूं तो उन्होंने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि बस-''तुम एक लड़की को शिक्षा देकर उसका जीवन संवार दो, ''जिसे पूजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था, पूजा अभी अतीत में ही खोई थी कि अर्दली ने आकर कहा-''मैडमजी रात हो गई है, गाड़ी में ड्राइवर आपका इंतजार कर रहा है,'' तो कार में बैठकर उसने ड्राइवर से सरिताजी के घर चलने के लिए कहा क्योंकि उसे वहाँ अपनी शादी का कार्ड देने और आशीर्वाद लेने जो जाना था।

सुनीता काम्बोज

जन्मतिथि- 10.08.1977

जन्म स्थान- ब्याना, करनाल (हरियाणा)

■ **वर्तमान पता**

मकान नंबर-120 टाइप-3, जिला-संगरूर, संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लौंगोवाल, पंजाब-148106

■ **शिक्षा**

हिंदी और इतिहास में परास्नातक

■ **कार्यक्षेत्र**

स्वतंत्र लेखन

■ **विधा**

ग़ज़ल, गीत, छंद, बालगीत, हाइकु, सेटोका, चोका, भजन, हरयाणवी गीत।

■ **प्रकाशन**

अनुभूति-काव्य संग्रह, किनारे बोलेत हैं-ग़ज़ल संग्रह। पत्र-पत्रिकाओं व ब्लॉग पर प्रकाशन : राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में निरंतर कविताओं और ग़ज़लों का प्रकाशन।

■ **सम्मान**

पाठकों का स्नेह।

■ **ब्लॉग**

मन के मोती, हिन्दी कविता

■ **लेखन का उद्देश्य**

सकारात्मक सृजन।

मनोरम छंद

आज कविता रो रही है
रोज गरिमा खो रही है
मंच की अश्लीलता को
देख व्याकुल हो रही है
तुम सुनो ये पीर इसकी
आँख में है नीर इसकी
आज धूमिल हो गई है
देख लो तस्वीर इसकी
ये सदा सुख बाँटती थी
आज काँटे बो रही है
आज...

आज ये थर्रा रही है
डूबती ही जा रही है
छंद इसके खो गए ये
छटपटाती गा रही है
ये निकल कर झोपड़े को
अब भवन में सो रही है
आज...

चापलूसी में फँसी है
जालसाजी में कसी है
काट दो जंजीर इसकी
क्यों सुनीता बेबसी है
स्वर्ण की ये टोकरी में,
आज कंकर ढो रही है
आज...।

मंजु गुप्ता

जन्मतिथि- 21.12.1953

जन्म स्थान-ऋषिकेश, उत्तराखंड, भारत

वर्तमान पता

19, द्वारका, प्लॉट क्रमांक-31, सेक्टर-1 ए वाशी, नवी मुम्बई पिनकोड-400703

फोन-09833960213

ईमेल-writermanju@gmail.com

शिक्षा : एमए (राजनीति शास्त्र), बीएड

कार्यक्षेत्रः सेवानिवृत्त हिंदी शिक्षिका नवी मुम्बई।

विधा

पद्य में छंद मुक्त, छंदबद्ध कविताएं, गद्य में निबंध, कहानी, आलेख, लघुकथा

प्रकाशन कृतियाँ

प्रांतपर्वपयोधि (काव्य), दीपक (नैतिक कहानियाँ), सृष्टि (खंडकाव्य), संगम (काव्य) अलबम (नैतिक कहानियाँ), भारत महान (बालगीत) सार (निबंध), (परिवर्तन) सामाजिक प्रेरणाप्रद कहानियाँ। देश-विदेश की विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान

वार्ष्णेय सभा मुंबई, वार्ष्णेय चेरिटेबल ट्रस्ट नवी मुंबई, एकता वेलफेयर एसोसिएशन नवी मुंबई, मैत्री फाउंडेशन विरार, कन्नड समाज संघ, राष्ट्र भाषा महासंघ मुंबई, प्रेक्षा ध्यान केंद्र, नवचिंतन सावधान संस्था मुंबई कविरत्न से सम्मानित, हिन्द युग्म यूनि पाठक सम्मान, राष्ट्रीय समता स्वतंत्र मंच दिल्ली द्वारा महिला शिरोमणी अवार्ड के लिए चयन, काव्य रंगोली साहित्य भूषण सम्मान, जैमनी अकादमी लघुकथा पुरस्कार, अग्निशिखा काव्य मंच काव्य सम्मान, मगसम रचना रजत प्रतिभा सम्मान, आशीर्वाद 24 घंटे कवि सम्मेलन काव्यपाठ, के.जे. सोमैया मुंबई पुरस्कृत, गुरु ब्रह्मा सम्मान, सबरंग कवि रत्न अवार्ड, कोपरेटर नवी मुंबई साहित्य सम्मान, इपीक लीटरी कौंसिल सम्मान, विश्व हिंदी संस्थान कनाडा से विश्व हिन्दी कथा शिल्पी सम्मान और हिंदी उपन्यास रचना सहभागी सम्मान ओंकार प्रतिष्ठान सम्मान, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा मुंबई, सेलिब्रेटिंग आइडिया जूरी पेनल सम्मान आदि।

लेखन का उद्देश्य

हिंदी सेवा में रत बहू-सांस्कृतिक, सामाजिक, विश्व मैत्री समन्वयकारी, मानवीय पुरुषार्थ, नव प्रयोगवादी, प्रबुद्ध विचारक साहित्यिक और विकासवादी प्रगतिशील दृष्टिकोण से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाना है।

दोहे में सर्दी

सूरज को सर्दी लगी, फसल गई कुम्हलाय।
जनजीवन है काँपता, सब को दिया रुलाय।।
सूर्य हो गया लापता, लेकर सारी धूप।
बिगड़ी ठंड से बचन, पीए ''मंजू'' सूप।।
सर्द भरी चौपाल में, जले हीटर, अलाव।
चर्चा में है स्वच्छता, शौचघर ओ चुनाव।।
धुंध-कोहरे में लगा, सर्दी का दरबार।
सारे दिन छाया रहा, था मौसमी बुखार।

कविता नागर

जन्मतिथि-16/10/1984

जन्म स्थान-सीहोर (मप्र)

■ **वर्तमान पता**

275 मिश्रीलाल नगर, कान्हा डेयरी के पास, देवास (मप्र) 455001

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**

7415581079

■ **शिक्षा**

स्नातकोत्तर (जैव प्रौद्योगिकी) और बीएड

■ **ब्लॉग**

kavita84@blogspot.in

■ **विधा**

कविता, कहानी, लेख इत्यादि

■ **प्रकाशन**

कुछ रचनाएं समाचार पत्रों में प्रकाशित, कहानियां और कविताएं प्रकाशाधीन

■ **लेखन का उद्देश्य**

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार हो, लेखन से लोगों की मानसिकता बदलने की कोशिश।

एक आंदोलन हो जाए...

राष्ट्र भक्ति कम हो रही है, चलो एक आंदोलन हो जाए...
ढूंढ कर लाना है, इसे ज़रा इसके लिए भारत बंद हो जाए।
विरोध के नारे लग रहे, बड़े शिक्षा संस्थानों में,
अलगाव की कालिमा आ रही है, दिल के मकानों में
बहुत दिन हुए है भाई साफ-सफाई हुई नहीं...
मन के जाले पनप रहे हैं, जरा स्वच्छता कर आए...
राष्ट्र भक्ति कम हो रही है, चलो एक आंदोलन हो जाए...
क्यों मनतंत्र सोया सा है और लोकतंत्र रोया सा है
आता नहीं कोई जगाने, अलार्म कोई बजाए...
तन पर तो है अभी भी घूंघट, मन पर भी पसरा है घूंघट,
चाहती है, गर सांस लेना, खुली हवा कहाँ से आए...
मौजमस्ती चल रही है, कहीं बाबाओं की लीला हैं...
लोगों को कैसे भरमाते, कैरेक्टर जिनका ढीला है...
पनपे ना ऐसे ये बाबा, कोई आंदोलन हो जाए।
काला धन आया नहीं, देशराग गाया नहीं...
दहेज प्रथा भी जारी है, कुप्रथा एक बीमारी है
कितनी बातें गलत है, क्यों ना आंदोलन हो जाए।
बिटिया कहीं बिक जाती है, कहीं लूटी खसोटी जाती है,
मजनुओं की मौज है, छेड़छाड़ भी रोज है...
पढ़ाई करने जाती है, तेजाब से जल जाती है
क्यों ना ऐसी बातों पर कोई आंदोलन हो जाए...
राष्ट्र भक्ति कम हो रही है, चलो एक आंदोलन हो जाए...
शहीद जो हो रहे सीमा पर, उस पर आंदोलन हो जाए।
गौमाता रंभा रही है, बोली मुझको तो छोड़ो...
शाकाहारी जीव हूँ मैं भी, हिंसा से मुझको ना जोड़ो,
नाम मेरा लेकर के, मानव ही मानव को मारे...
देख-देख के इनकी हिंसा, मैं कांपू भय के मारे..
गाय अगर भटक रही है, तो उसकी गौशालाएं बनवाए...
और गौमाता के नाम पर, राजनीति ना होने पाए...
राष्ट्र भक्ति कम हो रही है, चलो एक आंदोलन हो जाए...
संजीवनी हो कोई ऐसी, दिलों में देशप्रेम अजर अमर हो जाएं..।

प्रमिला व्यास

साहित्यिक उपनाम-प्रमिला ''शरद'' व्यास
जन्मतिथि- 29.04.1961
जन्म स्थान- उदयपुर

■ **वर्तमान पता**

179, ए ब्लॉक, (चंद्र-रमण) हिरण मंगरी सेक्टर नम्बर-14, उदयपुर, राजस्थान
मोबाइल-9460264456

■ **शिक्षा**

एमएबीई अंग्रेजी एवं संगीत विषय में अध्यापन

■ **कार्यक्षेत्र**

शिक्षण राजकीय शिक्षा विभाग,
राजस्थान सरकार

■ **सम्मान**

उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान, जिला कलेक्टर राजसमंद द्वारा, राजमहोत्सव सांस्कृतिक सम्मान जिला राजसमंद, अजूबा संस्था द्वारा साहित्य सम्मान, उदयपुर, साहित्य सागर, मंजिलग्रुप साहित्यिक मंच-दिल्ली, भारतवर्ष साहित्य सम्मान, कलेक्टर, डूंगरपुर द्वारा, सलीला बाल साहित्य रत्न सम्मान, सलूम्बर, उदयपुर, 2017, लायंस क्लब एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय-समय पर उत्कृष्ट कार्यों हेतु सम्मानित किया जाता रहा है।

■ **लेखन का उद्देश्य**

मानव मन की संवेदनशीलता का चित्रण, सामाजिक बुराइयों के निराकरण का प्रयास, बेटियों की वर्तमान युगा में व्यथा का चित्रण।

नव-सृजन सी बेटियाँ

क्या-क्या न सितम हँस के सहती है बेटियाँ,
फिर भी न शिकायत न शिकवा न शोखियाँ।
बातें ही बताने की छिपाती सी बेटियाँ,
सहमी सी बेटियाँ, सिहरी सी बेटियाँ।।

जननी जनक को जान से ज्यादा लगे प्यारी
हर जर्रे पर जुगनू सी चमकती लगे न्यारी।
पर उम्र के हर मोड़ पर हर पड़ाव पर
दरकती सी बेटियाँ, लरजती सी बेटियाँ।।

उमंगों का ज्वार रोज उठता है यूं दिल में,
हर बार एक टीस सी उठती है यूं दिल में।
फिर भी नीरव नदी के पानी सी बेटियाँ,
पनीली सी बेटियाँ, ठनीली सी बेटियाँ।।

हर हाल में सब खुश रहे अपने या पराए,
बचपन की यादों के धुंधले न हो साये
इस द्वार से उस द्वार निभाती सी बेटियाँ,
सलौनी सी बेटियाँ सयानी सी बेटियाँ।।

दुल्हन बन सँवर के जाती पराये घर,
बाबुल के दर को छोड़ अपनाती पराया दर।
मँझधार की धार में पतवार बेटियाँ,
एक सहारा बेटियाँ, एक इशारा बेटियाँ।।

हर रोज देते घाव नए रिश्ते और नाते,
हजार करो जख्म भुलाए नहीं जाते।
जहन्नुम के अंधेरों में उजालों सी बेटियाँ,
'शरद' किरण सी बेटियाँ नव सृजन सी बेटियाँ।।

रमा वर्मा

साहित्यिक उपनाम : रमा प्रवीर वर्मा
जन्मतिथि : 2 अक्टूबर
जन्म स्थान : जरसापुर (राजस्थान)
वर्तमान पता : प्लाट नंबर-13, आशीर्वाद नगर, हुडकेश्वर रोड, नियर : रेखा नील काम्प्लेक्स, नागपुर, 24 राज्य-महाराष्ट्र
मोबाइल/व्हाट्सएप : 7620752603
शिक्षा : स्नातकोत्तर डिग्री (हिंदी साहित्य), कम्प्यूटर डिप्लोमा कोर्स
व्यवसाय : गृहिणी
प्रमुख लेखन विधा : छंदमुक्त रचनाएं, गीत, ग़ज़ल, गीतिका, मुक्तक, भजन, दोहे, छंद, चौपाई
ब्लॉग : https://ramaverma12. blogspot.in/, https:// www. facebook.com/ramav3
प्रकाशित संग्रह : निर्झारिका (सांझा संकलन), काव्य सागर (सांझा संकलन), शुभमस्तु-2 (सांझा संकलन), कविता लोक (सांझा संकलन), गीतिका लोक (सांझा संकलन), तेरी यादें (सांझा ग़ज़ल संकलन), अब तो (सांझा ग़ज़ल संकलन), खट्टे मीठे रिश्ते और सुनो तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे (विश्व हिंदी संस्थान कनाडाद्वारा प्रकाशित) साझा मुक्तक संग्रह, शुभमस्तु-4, शुभमस्तु-5
सम्मान : कवितालोक रत्न सम्मान, डॉ. सुनील सिंह स्मृति सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, विश्व हिंदी संस्थान कनाडा द्वारा प्राप्त सहरचनाकार सम्मान, (गहमर वेलफेयर सोसायटी द्वारा प्राप्त) वूमंस ऑफ दी इयर 2015-2016, साहित्य साधक सम्मान 2017, विश्व हिंदी कथाशिल्पी सम्मान 2017

ग़ज़ल

भले कितनी करें सब साजिशें हमको मिटाने की।
अदा रखते हैं लेकिन हम नया सूरज उगाने की।

जलाकर हौंसले का दीप राहें कर चले रोशन,
नहीं हिम्मत किसी में है हमें आँखे दिखाने की।

खुदा ने गर हमें खामोश रहने का हुनर बख्शा,
तो हिम्मत भी अता करदी लड़ाई जीत जाने की।

हमारे हक में जो भी है उसे हम छीन लेते हैं,
नहीं आदत हमारी बेवजह आंसू बहाने की।

लगे ठोकर कभी तो गिरके हम फिर से सँभल जाते,
भला किसमें यहाँ ताकत हमें फिर से गिराने की।

हमारी शान में तो चाँद तारे भी करे सजदा,
अंधेरों में कहाँ ताकत है हमको आजमाने की।

रीता अरोड़ा (दिल्ली)

साहित्यिक उपनाम-जयहिंद (हाथरसी)

जन्मतिथि-20/10/1964, हाथरस (उप्र)

■ **वर्तमान पता**

रीता जयहिंद-हाउस नंबर 3941 प्रथम फ्लोर, गली थाने वाली रोशनारा रोड ओल्ड सब्जी मंडी दिल्ली-11007

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**

8368851064, 9717281210

■ **शिक्षा :** बीए, बीएड

■ **कार्यक्षेत्र :** कोरियर कंपनी में कार्यरत

■ **विधा**

हास्य रस, ओज रस, माहिया छंद, दोहा, मुक्तक एवं सम-सामयिक विषय पद्य-लघु कथा, आलेख, संस्मरण, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, समीक्षा, साहित्यकारों पर आलेख

■ **प्रकाशन**

साझा काव्य संग्रह-साहित्य सरोज साझा संग्रह (गहमर) परवाज़ साझा काव्य संग्रह, सखी परिवार साझा संग्रह, कुंज काव्य निनाद साजा संग्रह, कलम की सुगंध हाइकू साझा संग्रह, पुस्तकों की सदस्यता-मित्र संगम पत्रिका, मासिक सवेरा ई पत्रिका, दर्पण साहित्य साप्ताहिक समाचार पत्र में सदस्यता नियमित रचना प्रकाशित

■ **सम्मान**

स्वच्छता अभियान-2018 मोमेंटो, जनता टीवी कवि दरबार, चाय पर कविता यू ट्यूब चैनल मोमेंटो प्रशस्ति पत्र, नवांकुर साहित्य सभा काव्य पुरस्कार, सरोज साहित्य काव्य पुरस्कार गहमर, विश्वगुरु भारत परिषद (8-10) सम्मान, कलम की सुगंध हाइकू साझा संग्रह सम्मान, हमारा मंच यू ट्यूब चैनल

■ **लेखन का उद्देश्य**

शिक्षा का प्रसार व प्रचार, हिन्दी साहित्य का उत्थान, जन जागरण

हिंदी कैसे बने जन-जन की भाषा

हिंदी को जन-जन तक पहुँचाना बहुत जरूरी है।

सवाल है कि हिंदी कैसे बने जन-जन की भाषा?

बहुत आसान है प्रत्येक स्कूलों में पाठ्यक्रम में हिंदी की पुस्तक का होना नितांत आवश्यक है।

हिंदी की गिनती लिखना वपढ़ना अनिवार्य हो।

शिक्षा प्रशासन को यह नियम प्रत्येक स्कूलों में लागू करना होगा और बच्चों को हस्ताक्षर हिंदी में ही सिखाएँ। बच्चे भावी समाज का स्तम्भ होते हैं उन्हीं पर समाज की नींव टिकी है। बेशक सारी पढ़ाई किसी भी भाषा की हो, लेकिन व्यावहारिक भाषा में हिंदी जरूर लिखनी, पढ़नी व बोलनी बच्चों को सिखाने की जरूरत है।

हिंदी के पाठ्यक्रम में होने से बच्चे संस्कारी और अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पहचानने में सक्षम होगा।

नितांत आवश्यक है कि घर में अँग्रेजी समाचार पत्र के साथ हिंदी का भी समाचार पत्र जरूर आना चाहिए।

टेलीविजन पर हिंदी समाचार सुनने के लिए भी जरूरी है कुछ समय हिंदी समाचार सुने जाएँ। सरकार का और स्कूलों तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि हिंदी को जरूर अपनाएँ नकारें नहीं।

मैगजीन किसी अच्छे लेखक की और घर में रामायण तथा धार्मिक ग्रंथ भागवत गीता का पाठ करने की परम्परा जरूरी है। नियमित रूप से हिंदी का पठन-पाठन हमारे दैनिक जीवन की दिनचर्या में होना चाहिए, तभी संभव होगा कि माँ सी मातृभाषा कहीं भी विलुप्त नहीं होगी।

जैसे दीपावली, दशहरा एवं अन्य त्यौहार मनाते हैं हिंदी दिवस भी अवश्य मनाएँ।

शुभ्रा झा

जन्मतिथि- 3/7/1980
जन्म स्थान- बेतिया, बिहार

■ **वर्तमान पता**
502, राधिका अपार्टमेंट, पायोनियर हॉस्पिटल स्टेशन रोड, सीकर, राजस्थान

■ **मोबाइल/व्हाट्स एप**
9462632956

■ **शिक्षा**
एमएससी (सूक्ष्म जीव विज्ञान), बीएड

■ **कार्यक्षेत्र**
पुस्तकालयाध्यक्षा उमरडा, उदयपुर

■ **विधा**
गद्य, पद्य

■ **सम्मान**
कुज्ज काव्य प्रसून सम्मान
ब्लॉग-फेसबुक पेज ''अनकही बातें''
अन्य उपलब्धियाँ-विभिन्न पत्र-पत्रिका में रचनाओं का छपना

■ **लेखन का उद्देश्य**
अपनी भावनाओं को कविताओं के माध्यम से व्यक्त करती हूँ।

जन्नत

आज भी झेलम में पड़ी होंगी
जो बजती थी चूड़ियाँ कलाइयों पे कभी।
झुलता था बाजुओं में मेरे
आज भी लिपटा होगा दुपट्टा वहीं पे कहीं।

चौंक कर देखती हूँ उधर
जब कभी कानों में सुनती हूँ पश्तो या मीरपुरी।
एक अनचाहे दर्द में उतर जाती हूँ और
उसकी आँखों के आँसू उतर जाते हैं मेरी आँखों में।

अब तो चलती भी नहीं अपनी कश्ती कोई
कोई तरन्नुम सी सौगात भी नहीं
आँसू जो डाल दूँ झेलम में सभी
वो बचे भी नहीं अब मेरी आँखों में।

खुद रही है लंबी सुरंगे हमारे ही नीचे
गिर रही है लाशें कई उनको बचाने।
नाचते है शुतुरमुर्ग बनकर जहाँगीर सभी
और बाँट लेते हैं सभाओं की सब सीटें।

क्यों नहीं आते उनकी आँखों में वो सपने
जो धधकती हैं बरसों से मेरे सीने में
आज भी दिखती हैं वो पेड़ों पे टंगी नंगी लाशें
और सड़कों पे बिछी सम्मानें।

कौन है हम ये नहीं भूलेंगे कभी
और याद तुमको भी तो होगा ही सभी
भले आज कह लो विस्थापित
शरणार्थी या पलायित ही हमें।

बदले हैं अपने सभी के चेहरे सियासी रंगों में
जैसे उनके तन में लहू है ही नहीं।
क्यों आज खड़े है हम हाशिए पे और उनमें
कोई खुद्दारी नहीं।

बस एक बार मेरे दर्द भी जी कर देखो।
जन्नत तो दिल में लिए फिरते हैं हम।

रश्मि शुक्ला

साहित्यिक उपनाम-रश्मि शुक्ला
जन्मतिथि : 30/1/1988
जन्म स्थान : पीलीभीत उत्तर प्रदेश
वर्तमान पता : हांडा मार्केट गैस चौराहा हांडा एचपी गैस पीलीभीत उत्तर प्रदेश, पिन-262001
मोबाइल/व्हाट्सएप : 9639922644
शिक्षा : एमकॉम
कार्यक्षेत्र : लेखिका एवं कवयित्री
विधा : श्रृंगार रस
प्रकाशन : प्रजातंत्र का स्तम्भ मासिक पत्रिका, भावना संदेश त्रिमासिक पत्रिका
सम्मान : दौसा सम्मान समारोह 9 जनवरी 2018
अन्य उपलब्धियाँ : कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ, जिला बायरन प्रजातंत्र का स्तम्भ मासिक पत्रिका
लेखन का उद्देश्य : स्वाभाविक

फजीहत

इतनी ज्यादा खास कहाँ है मोहब्बत हमारी अभी,
जो आँखे जागे मेरी तो उनसे भी न सोया जाए,

इतनी भी शिद्दत नहीं रिश्ते में हमारे जनाब,
कि टूटने लगे माला तो उसे फिर से पिरोया जाए,

लाख कोशिशों के बाद भी कामयाबी हासिल नहीं,
कोई दाग नहीं इश्क जिसे आँसुओं से धोया जाए,

मेरी घबराहट को वो समझते हैं फजीहत अक्सर,
कैसे इन आंखों को बेवजह ही भिगोया जाए,

सब कुछ हुआ है वीरान मेरा मगर उन्हें क्या,
ये गम ऐसा कहाँ कि जिसमें सबको डुबोया जाए,

न चाहत है किसी चीज़ कि न उनकी चाहत मुझे,
नफरत के बीच कैसे इश्क का बीज बोया जाए,

वो कहते हैं दुनिया बर्बाद हुई उनकी मेरे आने से,
मेरे पास क्या बचा है जो उनके लिए खोया जाए...

प्रतिभा श्रीवास्तव

साहित्यिक उपनाम-'अंश'
जन्मतिथि- 1/3/1980
जन्म स्थान- छपरा (बिहार)
वर्तमान पता- 293/2, 'ए'-साकेत नगर, भोपाल
मो.-09977588010
शिक्षा-एमए हिंदी, पीजीडीसीए
कार्यक्षेत्र- मध्यप्रदेश लेखिका संघ की सदस्या
प्रकाशन-प्रथम काव्य संग्रह 2017 ''आवरण शब्दों का'' साझा संकलन-तीन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में विभिन्न पत्र-पत्रिका में कविता व लेख का नियमित प्रकाशन व काव्य पाठ करना, मॉडल हेतु कनाडा के पत्रिका में चयन, आकाशवाणी द्वारा बाल काव्य का प्रसारण
सम्मान-शब्द शक्ति सम्मान एवं हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित 2016, कृष्ण जैन स्मृति सम्मान 2017 साहित्य समीर द्वारा, राष्ट्रीय गौरव सम्मान 2017 साहित्य एकेडमी द्वारा, पांडुलिपि सम्मान 2017 भाषा सारथी सम्मान 2018, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, नारी सागर सम्मान 2018

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, मैं इस कथन का विरोध करती हूँ। नारी केवल श्रद्धा नहीं अपितु सृष्टि है, प्रकृति है, जो निस्वार्थ रूप से सृजन करती है। नारी इसी शक्ति का दूसरा नाम है। आदि से अभी तक नारी ने अपने आपको हर जगह सिद्ध व स्थापित किया है। नारी का स्वभाव जरूर कोमल है पर वो कमजोर कतई नहीं है और इसे प्रमाणित किया है आज की नारी ने, जो घर-बाहर दोहरी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते हुए अपने सपने को भी पूरा करती है। सब के बीच वो अपने वजूद को भी जीवनदान देती है। आज महिला दिवस के अवसर पर हर माँ से एक अनुरोध करती हूँ कि बढ़ते हुए यौन शोषण जो छोटी-छोटी बच्चियों के साथ हो रहे हैं, इसे गम्भीरता से लेते हुए अपनी मासूम बच्चियों को बुरे स्पर्शों की जानकारी दे, इन्हें समझाए की हमारा शिकार शिकार करने हेतु भेड़िया हर मोड़ पर घात लगाए बैठाहै, वो एक बहुरूपिया है जो रूपबदल-बदल के आता है, जिससे कि उसकी पहचान ना हो सके। बच्चों उसे आप सिर्फ स्पर्शों से पहचान सकते हो। वो ऐसा शिकारी है जो छल और बल दोनों का प्रयोग करता है। आज हम नारियों को भी अपनी लड़ाई लड़ने से पीछे नहीं हटना है। कई बार तो घटना घट जाती है और उसे दबा दिया जाता है। आज भी कई लोग है, जो अपनी बच्चियों की बदनामी के डर से चुप रह जाते हैं, जिसके फलस्वरूप इन भेड़ियों का हौंसला बढ़ जाता है और वो दूसरे शिकार की तलाश में जुट जाते हैं। सवाल सिर्फ बच्चियों का ही नहीं पूरी नारी जाती का है। आज नारी न तो अपने घर में, न पाठशाला, न कार्यालय और न ही बाजार में, कहीं भी सुरक्षित नहीं है। कभी तो उसका पुत्र ही उसे मार अपने ही घर में दफन करता है, तो कभी शिक्षक बन अबोध बालिकाओं के साथ दुष्कर्म करता है। एक पुरुष जो समाज व परिवार का संरक्षक माना जाता है, आज वो कैसे रास्ता भटक गया है।

आज के इस कलयुग में हर जगह दुःशासन अपने छल और बल के मद में चूर बार-बार चीरहरण कर रहा है और दोष दिया जाता है नारी को, नारी के आज के पहनावे को, जबकि दोष पूर्णरुपेण स्वयं इन आपराधिक प्रवृत्ति के पुरुषों की ही होती है, क्योंकि उन्होंने सिर्फ नारी को भोग-विलास की वस्तु भर माना है। वो भूल गए है की नारी शक्ति है, जो अपने अस्तित्व कई लड़ाई में पृथ्वी-आकाश और पाताल सबका विध्वंस तक करने का सामर्थ्य तक रखती है। नारी चुप है तो सिर्फ इसलिए कि वो सृजनकर्ता है और विध्वंस उसे पसंद नहीं, पर आखिर कब तक वो चुप रहेगी। आज पानी सर के ऊपर आ गया है। कुछ एक पुरुषों द्वारा किए गए कृत्यों के कारण पूरा पुरुष वर्ग बदनाम हो रहा है। बदनामी ने इस घाव पर जल्द से जल्द मरहम लगाना होगा, वरना मैं देख रही हूं इस रक्त रंजित घावों से स्त्री मन कराह उठा है, वो तैयारी में है संहार करने हेतु। अभी भी समय है सम्भल जाओ विक्षिप्त मानसिकता वालों। ये आखरी चेतावनी है, आज की नारी की, क्योंकि अब वो केवल श्रद्धा मात्र नहीं है अपितु महिषासुर मर्दिनी का अवतार भी है नारी...।

नविता जौहरी

जन्मतिथि- 5 दिसम्बर 1967
वर्तमान पता- के-7 फारच्यून एनक्लेव कोलार रोड भोपाल (मप्र)
फोन नं.-09425018974
ईमेल-njohri5@gmail.com

प्रकाशन-अब तक दो पुस्तकों का प्रकाशन : आनन्द पथ के नौ दशक तथा रोचक विज्ञान पहेलियाँ। अब तक कई पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है।

सम्मान-रोचक विज्ञान पहेलियाँ पुस्तक को हिंदी लेखिका संघ द्वारा सुशीला जिनेश स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

''जननी की पीड़ा''

जननी की पीड़ा तो जननी ही सहती है,
आँखों से अश्रुधारा अनवरत सी बहती है।

धरती माता हो या हाड़ माँस की हो पुतली,
आँचल में अपने जो ममता सँजोती है,
क्यूँ वह ही दोषी बन कटघरे में होती है,
बेटी है क्यूँ उपेक्षित जो सीपी का मोती है।

टूट गए अब सारे धीरज के सेतु बँध
अब न होने देगी अन्याय अपने और बेटी संग,
नारी में जागी आज चेतना की ज्योति है,
बेटी भी बेटों से कमतर नहीं होती है।

अब उसको भय नहीं जग का संसार का,
आज उसको ज्ञान है अपने अधिकार का,
जननी तो है महान और सबला कहती है,
बात अब ये जगत सिद्ध और बड़ी महती है।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

जन्मतिथि- 4/10/57, देहरादून
वर्तमान पता- 95, ब्लॉक-एच दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर डाकघर-नेहरू ग्राम देहरादून-248001 (उत्तराखंड)
मोबाइल/व्हाट्सएप-9759252537
शिक्षा-एमए, बीएड, डी फिल (शोध द्वारा)
विधा-कविता, लेख, संस्मरण, कहानी, लघु कथा, समीक्षा आदि।
प्रकाशन-1. पुस्तकें-1. कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985
2. बच्चन साहित्य अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998
2. साझा संग्रह... फुलवारी, रूपायन, भोर का तारा, भारत की प्रतिभाशाली कवयित्रियाँ, भारत के प्रतिभाशाली रचनाकार, स्वातंत्र्योत्तर कवि कवयित्रियाँ, प्रेम काव्य सागर, काव्य अमृत, अथ से इति वर्ण स्तम्भ (वर्ण पिरामिड संग्रह), शत हाइकुकार साल शताब्दी, अखिल भारतीय काव्यधारा, काव्यगंगा तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, लेख, लघुकथाएँ, कहानी प्रकाशित।
संपादन-1. प्रवाह (विद्यालय पत्रिका)
2. आदर्श काँमुदी (मासिक पत्रिका बिजनौर) के गंगा विशेषांक का संपादन।
अनुवाद-1. डॉ. रमण शांडिल्य, संपादक-अरुण नागरी (त्रैमासिक) की बज्जिका कविताओं का अनुवाद ''सद्भावना दर्पण'' (मध्यप्रदेश) और ''अंचल भारती'' (उत्तर प्रदेश) में प्रकाशित।
सम्मान-अखिल भारतीय हिंदी प्रसार प्रतिष्ठान महेन्द्र, पटना द्वारा ''काव्यालंकार'' की मानद उपाधि से सम्मानित। भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा वीरांगना सावित्रीबाई फुले फेलोशिप सम्मान-2001, अरुणाचल नागरी संस्थान ईटानगर द्वारा हिंदी साहित्य सेवा के लिए सम्मानित। भारतीय वाङ्मय पीठ, साहित्यिक संस्था, कोलकाता द्वारा ''युगपुरुष स्वामी विवेकानंद पत्रकार-रत्न सारस्वत सम्मान'' से सम्मानित-2016, जेएमडी पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा ''नारी गौरव सम्मान'' ''प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान'', ''प्रेम सागर सम्मान'', ''अमृत सम्मान''-2016, हिंदी सागर सम्मान-2017, नारी भूषण सम्मान-2017, साहित्यिक योगदान के लिए वाणिज्य मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा सम्मानित-2016, आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा, रामपुर, भारत द्वारा ''काव्यप्रज्ञा'' सम्मान से सम्मानित-2016, श्रीमती शोभा 'आनंद' स्मृति सम्मान-2017, साहित्य-मनीष सम्मान-2017, दोहा श्रेष्ठ-2017, पृथ्वी पुत्री-2018, साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा ''हिंदी विभूषण'' सम्मान से सम्मानित, श्री गोविंद हिंदी सेवा समिति (पंजी.) मुरादाबाद उप्र द्वारा ''हिंदी भाषा रत्न'' सम्मान-2017, उम्मीद की किरण-साहित्य मंच, आदिपुर, कच्छ, गुजरात द्वारा साहित्य तुलसी सम्मान-2017, अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018, भाषा सारथी सम्मान 2018
लेखन का उद्देश्य-अपने पिता से मिली ''हिंदी प्रेम और लेखन की विरासत'' को अपने लेखन से समृद्ध करते हुए अपनी हिंदी माँ के गौरव को बढ़ाना।

नाव

चल पड़ी है
नाव अपनी
ढूँढने अपना बसेरा
साथ चल रही
चाहतें अपनी
देखने उज्जवल सवेरा
माँझी बनकर
बीच नदिया
देख लें लहरों को
जाने फिर कब
साथ लाए ये
बदलते समय का फेरा
मुश्किलें गढ़तीं हमें
उनसे भला हम
क्यों कर अब डरेंगे
ठाना नभ पर
अब इन्हीं से
गीत एक नया लिखेंगे
थामे नेह-डोरी
उड़ान भरने अब
रोके किसी के नहीं रुकेंगे।

कुसुम सिंह

साहित्यिक उपनाम-''अविचल''
जन्मतिथि- 29 अप्रैल 1957
जन्म स्थान- कानपुर उप्र
वर्तमान पता- प्लॉट-1145, रतनलाल नगर कानपुर-208022
मो.-9453815403, 8318972712
शिक्षा-परास्नातक (अर्थशास्त्र)
कार्यक्षेत्र- पूर्व पंजाब नेशनबल बैंक कानपुर
सामाजिक क्षेत्र-नगर एवं बाहर की गतिविधियां
विधा-कविता, गीत, मुक्तक, छंदमुक्त, दोहा, लेख
प्रकाशन-प्रथम कविता संग्रह ''अनुभूति से अभिव्यक्ति तक'' प्रकाशित 2016
सम्मान-पंजाब नेशनल बैंक कानपुर द्वारा ''राजभाषा सम्मान'' 2015 एवं प्रधान कार्यालय दिल्ली द्वारा लाला लाजपत राय सम्मान 2016 विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा ''श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान 2017, आगमन साहित्यिक संस्था दिल्ली द्वारा ''आगमन गौरव सम्मान 2017 इत्यादि सहित और अनेक।
अन्य उपलब्धियां-विभिन्न साहित्यिक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं में अध्यक्षता, संरक्षण, सलाहकार का दायित्व निवर्हन
लेखन का उद्देश्य-आत्मिक सुख-शांति एवं समाज कल्याण

''राही''

राहें सरल न हो जिनकी,
पग-पग पर जिनके कांटे हों।

चलता रहा कंटीले पथ पर,
फूलों ने शूल ही बांटे हों।

पत्थर काटे जिसने हरदम,
राहें अपनी स्वयं गढ़ी हों।

उस राही पर दृष्टि सभी की,
कसौटियां हर राह खड़ी हो।

पर अबाध वह चलता रहता
पथ पर ठिठक ठिठक कर।

आहत मन में कुछ कसक लिए,
बढ़ता चलता सिसक-सिसक कर।

सीमा शिवहरे

साहित्यिक उपनाम-सीमा शिवहरे ''सुमन''
जन्मतिथि- 10/11/1980
वर्तमान पता- भूमिका रेसीडेंसी बी ब्लॉक फ्लैट नं. ई-4, मंदाकिनी शिर्डीपुरम कोलार भोपाल मप्र
मो.-9993168822, 7987686434
शिक्षा- बीए अंग्रेजी साहित्य, एमए राजनीतिक विज्ञान।
विधा-कविता, काव्य व्यंग्य, मुक्तक, लघुकथा, गीत हिन्दी बुंदेलखंडी, मालवी बोलियों में।
प्रकाशन-'काव्य संग्रह' वो नीम का पेड़ 2017 साहित्यिक सम्मान-1, हिन्दी सेवी सम्मान 2017 2. कल्चुरी गौरव सम्मान 2018, 3. नव लेखन सम्मान 2018, 4. अखिल भारतीय महिला साहित्य सम्मान
अन्य उपलब्धियाँ-1. बेहतर नृत्य निर्णायक के लिए खेल युवा कल्याण विभाग द्वारा सम्मान। 2. समाज सेवा के लिए एलएनसीटी ग्रुप द्वारा सम्मान, 3. बेहतर मंच संचालन के लिए कल्चुरी समाज, दामिनी की आवाज एवं श्यामाप्रसाद मुखर्जी समिति द्वारा सम्मान

''हमारी सीमा तय है''

सीमाओं में रहने वाली
डोली में चली सीमा के पार।
सीमा ही सीमा होंगी
अब सीमा के पार।

सीमा है, शब्द तो छोटा सा
बंदिशें कई हजार।
हर नारी की सीमा तय है
घर में हो या बाहर।

हमें बिठा कर ले आते हैं
डोली में चार कहार।
अर्थी तक सीमा तय है
दो दिन जियों या चार।

सीमाओं में बंधी हुई
मैं नैया हूँ लाचार।
मेरे हाथों नहीं रही अब
खुद मेरी पतवार।

पतंग हूँ डोर गैर हाथ में
उड़ चली संग बयार।
तोड़ी सीमा तो कट जाऊँगी
जग लूटन को तैयार।

तू बिन साथी, मनहूस है अब
शुभ काम में वर्जित हरबार।
विधवा नारी सीमा में रहे
विदुर पुरुष फिर तैयार।

पंछी होती अच्छा होता,
दोनों मुल्क में करती बिहार!
इंसा होके मैंने क्या पाया,
सीमा के अत्याचार।

डॉ. मीनू पाण्डेय

साहित्यिक उपनाम-नयन
जन्मतिथि- 19 फरवरी उत्तर प्रदेश
वर्तमान पता- 39, सुरभि परिसर, अयोध्या बायपास रोड, भोपाल पिनकोड-462041 मप्र
शिक्षा-पीएचडी
कार्यक्षेत्र- प्रोफेसर
विधा-मुक्त
मोबाइल-9893987434
प्रकाशन-अंग्रेजी शिक्षण पर दस पुस्तकें प्रकाशित, शोध पर तीन पुस्तकें प्रकाशित, रिसर्च पेपर-50 विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलस में प्रकाशित
साझा संग्रह- काव्य सौंदर्य, बीपीवी पब्लिकेशन (पुणे), हिन्दी सागर त्रैमासिक पत्रिका अंक जनवरी-मार्च 2017 अप्रैल-जून 2017, जुलाई-सितम्बर 2017, कश्ती में चांद, केजी पब्लिकेशन, मथुरा-जून 2017, अल्फाज के गुंचे, अजमेर पोस्ट्स कलेक्टिव अगस्त 2017, संदल सुगंध, आगमन समूह, नई दिल्ली, सितम्बर 2017, अनुभूति, सत्यम प्रकाशन, नवम्बर 2017, मृगनयना, सत्यम प्रकाशन 2017, भाषा सहोदरी सोपान-4, अंतरा शब्द शक्ति द्वारा ''स्पंदन 2018, अंतरा शब्द शक्ति द्वारा ''मकरंद'' 2018, 36 से अधिक रचनाएं विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित।
एकल संग्रह-थोड़ा सा रुमानी हुआ जाए उदीप्त प्रकाशन द्वारा आगामी 10 साझा संग्रह में रचनाएं।
प्रधान संपादक-IJILS journal
अतिथि सम्पादक-हिन्दी सागर पत्रिका (जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितम्बर और अक्टूबर-नवम्बर)
संपादक-भारत की हिन्दी कवित्रियां, साहित्य उदय अभिव्यक्ति, अर्पण, काव्य किरण
सह संपादक-भारत के युवा कवि एवं कवियित्रयां
सचिव-बुंदेली साहित्य समिति
सम्मान-सृष्टि (भोपाल) 2013 द्वारा उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान (for Communication Skills), प्रगतिशील ब्राह्मण संस्था (भोपाल) 2016 द्वारा प्रगतिशील शिक्षक सम्मान, ज.मे.ए. एवं एशि मे.एसो. (बैंकाक) द्वारा अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस इन टीचिंग 2016, होलसम डेवलपमेंट सोसाइटी द्वारा महिला गौरव सम्मान 2017, सीआईआई द्वारा सिस्टेक गुरु अवार्ड 2017, विश्व रचनाकार मंच द्वारा हिन्दी सागर सम्मान 2017, सोशल रिसर्च फाउंडेशन द्वारा शोध परक सम्मान 2017, वीपीवी पब्लिकेशन द्वारा काव्य सौंदर्य सम्मान 2017, जेएमडी पब्लिकेशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ कवयित्री सम्मान 2017, केजी पब्लिकेशन द्वारा साहित्य सारथी सम्मान 2017, जेएमडी पब्लिकेशन द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान 2017, सत्यम प्रकाशन द्वारा काव्य सागर सम्मान 2017, भाषा सहोदरी हिंदी द्वारा भाषा सहोदरी सोपान सम्मान 2018, अंतरा शब्द शक्ति द्वारा अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018

जिन्दगी

मुमकिन नहीं है जब खुशियों को गुनगुनाना।
कब तक गमों के गीत में गाता जिन्दगी।

एक राह मोहब्बत की एक राह जुदाई की।
किस राह पर खुद को ले जाता जिन्दगी।

कुछ लापता सी हूं जब से खुद की तलाश की।
किस तरह खुद को खोजकर लाता जिन्दगी।

दाव पर लगी थी खुशियाँ तमाम मेरी।
किस तरह खुद को खुश दिखाता जिन्दगी।

झुक गया हूं ख्वाहिशों के बोझ के तले।
और किस तरह तुझको रिझाता जिन्दगी

डॉ. वर्षा चौबे

जन्मतिथि- 04/04/1971 नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)
मोबाइल-9827318628
शिक्षा-एमए (अर्थशास्त्र, हिन्दी)
कार्यक्षेत्र- सरकारी शिक्षिका
विधा-कविता, लघु कथा, कहानी, गीत, बाल साहित्य
ई मेल-VARSHACHOUBEY04@ GMAIL. COM

प्रकाशन-बाल साहित्य की किताब ''बाल-वैभव'' 2012 जेएमडी पब्लिकेशन की दो किताबों के सम्पादन में सहयोग।
आकाशवाणी और दूरदर्शन पर कविता पाठ व आलेख वाचन।
सम्मान-बालिकाओं की शिक्षा के लिए व अप्रवेशी और शाला त्यागी बच्चों के लिए काम करना मध्यप्रदेश लेखिका संघ ''नवोदित लेखिका सम्मान''-2013, श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान 2005, डॉ. गुलाब राय स्मृति श्रेष्ठ शिक्षिका सम्मान 2015, श्रीमती रक्षा सिसौदिया शिक्षिका सम्मान 2016, जेएमडी पब्लिकेशन ''नारी शक्ति सम्मान'' 2014, सामाजिक व साहित्यिक सेवा हेतु कादिम्बनी संस्था द्वारा ''साहित्य सेवा सम्मान 2017'', अंतरा समूह द्वारा ''शब्द शक्ति सम्मान'' 2017, मातृभाषा डॉट कॉम द्वारा भाषा सारथी सम्मान 2017, दैनिक भास्कर द्वारा सम्मानित
लेखन का उद्देश्य-आत्मसंतुष्टि

मौन (कविता)

कुछ मौन-सा पसरा
हर जगह लगा।
अक्लांत
जाने क्यों भाषा
चुप हुई
कोलाहल बढ़ने लगा।
सब कुछ सरल
तरल सा
इस मौन में
बहने लगा।

निर्द्वंद सा
अंतस को
खंगोलता, टीसता
मौन बहुत बेचैन लगा।

कभी चंचल
छटपटाता-सा
और कभी
गहन, गंभीर
विवेक-सा लगा।

कुछ दबी-सी
चिंगारियों की
राख, कुछ
सुलगते
आक्रोश और
तिमिर को चीर
उजाले की
आहट सा लगा।

पूनम झा

वर्तमान-सी-स्थायी पता/127, थर्मल कॉलोनी, (राजस्थान) कोटा, सकतपुरा 324008

व्हाट्सएप-9414875654

शिक्षा-(ऑनर्स) एबी, बीएड

Email-poonamjha 14869@gmail. com

व्यवसाय-गृहिणी

साहित्यिक परिचय फेसबुक के ब्लॉग लिखती हूं-समूहों पर सक्रिय

प्रकाशन-दैनिक नव ज्योति, दैनिक भास्कर, हिंदी साहित्य, अमृत काव्य, साहित्य लोक, सेवा इत्यादि अखबार, अमर उजाला, नारी काव्य, सागर है।

सम्मान-विश्व हिंदी, अमृत काव्य सम्मान-श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान एवं फेसबुक समूहों पर कई सम्मान प्राप्त हुए है।

अदृश्य फफोले

जब भी रुबी आलमीरा खोलती उस नन्हीं सी जान की तस्वीर देख ही लेती थी। आज भी उसकी तस्वीर निहार रही थी और यादों में खोई थी। दूसरी संतान भी बेटी-''देखकर सबने ऐसे मुँह बनाए थे जैसे सब दिल से बेटे की दुआ माँग रहे हो। अरे जेठानी कब अपनी होती है?''... रुबी उस तस्वीर से जैसे बातें कर रही हो पर-''गुड़िया मैंने तुझे अपने कलेजे से कब दूर किया? मेरे बारे में तो सोचती, साढ़े तीन महीने में ही उकता गई? मुझे छोड़ जाने में कुछ भी सोचा नहीं? देख दुनिया की तरह ये आंसू भी निष्ठुर हो गए। अब ये भी नहीं टपकते। इतने साल हो गए मगर एकाएक पल हमें याद है। वो खिलखिलाना, वो रोना और वो तेरा।''

सोचते सबने-सोचते रुबी वहीं बैठ गई-दुख प्रकट किया था। लेकिन दूसरी वाली जेठानी ने 'दहेज के लाखों रुपए भी तो बच गए। ये शब्द दिल पर ऐसे लगे-''जैसे किसी ने दिल पर तेजाब फेंक दिया हो। तस्वीर पर टपके आंसू को पोंछकर...।'' उन्नीस साल हो गए पर आज ''... चूमते हुए भी वो दिल पर बने फफोले सूखे नहीं है।''

अंशु त्रिपाठी

साहित्यिक उपनाम ''अनुजा''
जन्मतिथि- 19/9/1976 सतना (मप्र)
शिक्षा-एमएससी (परमाणु रसायन विज्ञान) एमबीए (एचआरडी)
पता-इन्दौर (मप्र)
कार्यक्षेत्र- अभिनय, लेखन एवं संपादन लेखन एवं संपादन 1. भावांजलि (काव्य) 2. अक्षरों की ओट से (काव्य) 3. अंजुरी (काव्य) 4. पावनी (काव्य) 5. निर्झरिका (शॉर्ट नॉवेल) 6. वीथिका (कॉमेडी शार्ट नॉवेल) 7. सुगंधा (उपन्यास) 8. मुझे स्वीकार है (उपन्यास) 9. भांत-भांत की मानुसी (कहानी संकलन) मुख्य संपादक सूक्तिका प्रकाशन कलकता प्रमुख संपादक ''उड़ान''।

प्रकाशन-अनेक साझा संग्रहों एवं संचार पत्रों में आलेख व रचनाएँ प्रकाशित टीवी फिल्म्स में लेखक और सहयोगी निदेशक के रूप में कार्य।

सीरियल और डॉक्यूमेंट्री-
टीवी सीरियल ''एक बयान'' डीडी कशीर पर टीवी सीरियल ''जिहाद या जुर्म'' डीडी कश्मीर पर डीडी नेशनल पर देवेंद्र सत्यार्थी पर एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म मैं हूँ खानाबदोश प्रदर्शित। ब्रिटिश काउंसिल 2004-05 में एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का चयन किया गया जिसका शीर्षक जिहाद है।

लघु फिल्म-द ब्लूज्स द लाइफ, द लाइफ लाइन, द टिप, दे वेगर, खुशबू।

अभिनेत्री के रूप में कार्य-खामोश में अफसाना दैनिक धारावाहिक राष्ट्रीय दूरदर्शन पर दो साल तक जिंदगी की महक धारावाहिक जी टीवी पर

सम्मान-विजेता दिल्ली काव्य महोत्सव 2015 व 2016 अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद यंग अचीवर अवार्ड 2016 लिटररी अवार्ड इंटरनेशनल डेल्ही फिल्म फेस्टिवल।

एसिड अटैक के खिलाफ एक ख़्याल

है औरत सीप का मोती उसे नायाब रहने दो
सुकूँ दे जो जहाँ भर को वही महताब रहने दो।

वो कातिब ख़ुद कहानी की वही किरदार भी उसमें
उसे अपनी बयानी का खुदी अस्हाब रहने दो।

हुआ आगाज़ नस्लों का किया इख़्लास आदम से
उसे अब भी मोहब्बत का वही अस्बाब रहने दो।

परों का ले सहारा जन्नतों की सैर करता है
उसे मर्दों की दुनिया का वही सुर्खाब रहने दो।

निकलती दहशतों के संग सड़क पर आजकल है वो
न झुलसाओ कि उसकी आबरू शादाब रहने दो।

अना पर ज़ख्म उसने जज़्ब करके दर्द झेला है
उसे हक़ दो गिरह को तोड़ अब सैलाब बहने दो।

जला कर ख़ाल छलनी रुह करके तुम बचोगे क्या?
अभी उसके अदल का भी जरा गिर्दाब ढहने दो।

कभी सोचा अगर झुलसाए तुम भी यूँ ही जाते तो?
रहो अब ख़ौफ़ में ही अपना आब-ओ-ताब रहने दो।

शिकस्ता हो मुकद्दर से कुबूले हार अपनी क्यों
सौंकर अतिशी जज़्बे उसे तेज़ाब रहने दो।

मीना विवेक जैन

जन्मतिथि- 1/6/1984, शाहगढ़
वर्तमान पता- श्रीमान विवेक जैन, जैन दूध डेयरी वारासिवनी, 481331, मध्यप्रदेश
मो.-9300764995
शिक्षा-बीए
कार्यक्षेत्र- गृहणी
विधा-काव्य और संस्मरण
सम्मान-अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018
लेखन का उद्देश्य-आत्मसंतुष्टि

''महिला जीवन''

महिला जीवन कितना प्यारा
मिला तुम्हें उपहार

तुम ही शक्ति, तुम ही संबल
कर लो तुम स्वीकार

आदर्शों की शिक्षा देती
वो ''माँ'' ममता का रूप

हर सुख दुख में साथ निभाती
वो ''पत्नी'' प्रेम का रूप

खुशियों की जो करें कामना
वो ''बहिन'' दुआ का रूप

घर आँगन को जो महका दे
वो ''बेटी'' खुशबू स्वरूप

सब रिश्ते साकार करें वो
महिला जीवन प्यारा

त्याग और स्नेह बरसते
मातृत्व को नमन हमारा।

सुधा गोयल

साहित्यिक उपनाम-''नवीन''
जन्मतिथि- 25 जुलाई
सम्पर्क-3533, सतमला, विजया हेरिटेज
फेज-7 कदमा, जमशेदपुर-831005
दूरभाष, व्हाट्सएप-09334040697
ईमेल-goelsudha@gmail.com
ब्लॉग-http://sudhanavin.blogspot .com/

शिक्षा-स्नातक शिक्षा (मनोविज्ञान) एमए (हिन्दी)

कार्यक्षेत्र- बारह वर्षों तक सतत अध्यापन, कॉलेज स्तर पर। तत्पश्चात रोटरी, इनरव्हील आदि संस्थाओं से जुड़कर councillor की हैसियत से समाज सेवा।
'सहयोग'' बहुभाषीय साहित्यिक संस्था की सक्रिय सदस्या।

प्रकाशन-विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं हँस, वनिता, सखी, तुलसी प्रभा, दैनिक जागरण, उदित वाणी, हिन्दुस्तान, प्रभात खबर, माधुरी इत्यादि में नियमित प्रकाशन। व्हील-जील पत्रिका का संपादन

प्रसारण-आकाशवाणी जमशेदपुर से नियमित रूप से लेख व कहानियों का प्रसारण और बादल छँट गए कहानी संग्रह सन 2010 में 'सहयोग' प्रकाशन से प्रकाशित।
''चूड़ी वाले हाथ'' कहानी संग्रह सन 2017 में 'दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से प्रकाशित।

अनुवाद-लायंस क्लब के शैक्षणिक कार्यक्रम की Teen Ager समस्याओं से संबंधित अनेक पुस्तकों का अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद।

सम्मान-1. राजस्थानी साहित्य एवं सांस्कृतिक परिषद झारखंड द्वारा 2009 का साहित्य-सेवा पुरस्कार, 2. झारखंड मारवाड़ी महिला शाखा द्वारा 2010 का साहित्य सेवा पुरस्कार, झारखंड लौह नगरी जमशेदपुर के ''Jamshedpur Anthem'' की लेखिका।

तुम आबाद रहो, मेरा क्या?

संथाल परगना क्षेत्र के एक छोटे से गाँव में रोमांचकारी दृश्य था। एक नन्हीं सी बच्ची जो शायद दो वर्ष से भी कम उम्र की थी, अपनी माँ की गोद में सजी धजी बैठी थी और उसका विवाह हो रहा था। परिवार के लोग इकट्ठा थे, पंडित व पूजा का सामान विधिवत मँगाया गया था। मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम तल्लीनता से संपन्न हो रहा था। वर कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था, पूछने पर पता चला कि कन्या का विवाह उसी पेड़ से बनाया जा रहा है, जिसकी घनी छाँव तले सारा जनसमूह एकत्रित था। जिज्ञासा उत्सुकता में बदल गई। पूरी जानकारी लेने के लिए मैंने उस गाँव के मुखिया की तरफ कदम बढ़ाए, जो कार्यक्रम स्थल से कुछ दूरी पर वधू को विवाहोपरांत आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित थे। उन्होंने जो जानकारी मुझे दी उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

उन्होंने बताया कि उनके समाज में यदि किसी कन्या के ऊपर के दाँत पहले निकलने लगते हैं तो इसे कन्या एवं परिवार के लिए अपशकुन समझा जाता है और धारणा है कि कन्या का विवाह होते ही उसका पति मर जाएगा। वह विधवा हो जाएगी। इसलिए शीघ्रताशीघ्र उसका विवाह किसी पेड़ से कर दिया जाता है। जब वह पेड़ सूखने लगता है तो खुशियाँ मनाई जाती हैं और यह समझा जाता है कि कन्या के ऊपर से बला टल गई।

मेरी नजर उस निरीह, मूक वृक्ष की ओर गई जो शायद कह रहा था, तुम आबाद रहो, मेरा क्या?

लेकिन उसकी आवाज किसी को सुनाई नहीं दी।

डॉ. उषाकिरण सोनी

जन्मतिथि- 29 जनवरी 29152 मुंडेरवा, जिला-बस्ती (उप्र)
वर्तमान पता- 'ज्ञान कुंज', 307, गाँधीनगर कॉलोनी, लालगढ़, बीकानेर (राज.) 334001
मो.-9929181526
शिक्षा-एमए समाजशास्त्र, हिंदी (स्वर्णपदक) पीएचडी
कार्यक्षेत्र- स्वतंत्र लेखन (से.नि. हिंदी व्याख्याता-के.वि.सं.)
विधा-कविता, कहानी, निबंध, यात्रा वृत्तांत, बालगीत, बालकथा, शोधलेख।
प्रकाशन-अक्षरों की पहली भोर, मौन के स्वर, मुक्ताकाश में, काम्य, नैपथ्य का सच, तृष्णा तू न गई..., नए सूरज की तलाश, मेरी यूरोप यात्रा, टिम टिम तारे, घरौंदा, कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य (13 पुस्तकें प्रकाशित)।
सम्मान/पुरस्कार-अनेक हैं-मुख्य हैं-युद्धवीर फाउंडेशन पुर, (ऑ.प्र.), शंभूशेखर सक्सेना विशिष्ट साहित्य पुर. (राज.), पं. विद्याधर शास्त्री अवार्ड (राज.), कलम कलाधर मानद उपाधि (राज.), मेढ़ महिला दीप पुर. (बंगलोर) साहित्यकार सम्मान -गंगासिंह वि.वि. (बीकानेर), सुंदर सुरभि सम्मान (बीकानेर), सावित्रीबाई फूले फिलोशिप सम्मान (दिल्ली) आदि।
अन्य उपलब्धियाँ-रचनाओं पर लघु शोध संपन्न, पीएचडी स्तरीय शोध में रत शोधार्थी।
लेखन का उद्देश्य-आत्म तृष्टि एवं रचनाओं से समाज को दिशा-निर्देश देने का प्रयास।

रसवंती निशा

चुनर ओढ़ रात सजी,
चाँद की बारात सजी,

तारों के पग थिरके,
द्वारों पर दीप जगे,

मंदिरों में घंट बजे,
आरती के बोल सजे,

राही निज गृह पहुँचे,
आनन पर पुष्प खिले,

महकी रजनीगंधा,
सजनी का मन बहका,

नाच उठी रसवंती निशा,
मुस्काई निकट आती उषा।

आयुषी भंडारी

जन्मतिथि- 14/1/1993, धार
शिक्षा-बीबीए, एमबीए
कार्यक्षेत्र- जॉब
सामाजिक क्षेत्र-अध्यक्ष अनुरीति मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी (एनजीओ) उपाध्यक्ष-अपना प्रयास वेलफेयर
विधा-ओज, गीत, छंद इत्यादि
ईमेल-aayuangle143@gmail.com
प्रकाशन-साहित्य संगम
सम्मान-श्रेष्ठ रचनाकार विषय (माँ)
लेखन का उद्देश्य-सामाजिक पुनरुत्थान हेतु

माँ मुझसे तू बोलना

माँ मुझसे तू बोलना
किस बात पर तू रुठी
होंठों में समेट मुस्कान तू झूठी

दिल के दुखड़े तू खोलना
माँ मुझसे तू बोलना

ख़फ़ा-ख़फ़ा सी तू मुझको न सुहाती
छुप-छुप कर तू खूब आँसू बहाती
होंठों पर यशोदा सी लाली को बिखेर

तेरी इस हठ को तू छोड़ना
माँ मुझसे तू बोलना

तेरे प्यार की ही तो आस है
चातक को जैसे नीर की प्यास है
अपने ममतामयी हाथों के स्पर्श से

मेरे दुख दर्द तू तोलना
माँ मुझसे तू बोलना।

इंजी. आशा शर्मा

जन्मतिथि- 22 जनवरी 1971, बीकानेर
वर्तमान पता-ए-123, करणीनगर (लालगढ़), बीकानेर, राजस्थान
मोबाइल/व्हाट्सएप-9413359571
शिक्षा-अभियांत्रिकी (Engineering)
कार्यक्षेत्र- सहायक अभियंता, (विद्युत विभाग) बीकानेर
सामाजिक क्षेत्र-लेखन
विधा-कविता, कहानी, लघुकथा, लेख, बाल साहित्य आदि
प्रकाशन-तस्वीर का दूसरा रुख (कहानी संग्रह-2018), अंकल प्याज (बाल कविता संग्रह-2017), उजले दिन-मटमैली शामें (लघुकथा संग्रह-2016) पुरस्कृत, अनकहे स्वप्न (काव्य संग्रह-2015) पुरस्कृत, सरिता, गृहशोभा, मुक्ता, गृहलक्ष्मी, वनिता, सरस सलिल, सहेली, नंदन, बाल किलकारी, जनसत्ता, पंजाब केसरी, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका,दैनिक ट्रिब्यून, नई दिल्ली, अजित समाचार, सेतु (अमेरिका) पंजाब टुडे (कनाडा), शब्द संयोजन (नेपाल), समाज कल्याण मधुमति सहमति विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेख प्रकाशन।
सम्मान-राष्ट्रीय स्तर पर दो दर्जन से अधिक सम्मान, पुरस्कार, विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में रचनाएँ पुरस्कृत, सभी प्रकाशित पुस्तकें राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत, सम्मानित।
अन्य उपलब्धियाँ-आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर लगातार रचनापाठ, रचनाओं का नेपाली, पंजाबी एवं राजस्थानी भाषा में अनुवाद।
लेखन का उद्देश्य-आत्मसंतुष्टि।

साइड इफ़ेक्ट

हर तरफ बस एक ही रंग.. स्याह... स्याह रंग बेरोजगारी का... स्याह रंग आतंकवाद का... स्याह रंग भ्रष्टाचार का... स्याह रंग महंगाई की... स्याह रंग लूटपाट और छीनाझपटी का... स्याह रंग महिलाओं से छेड़छाड़ का...

खाने को अनाज तो है मगर केवल कीटनाशकों के दम पर उगाया गया, जिसमें पौष्टिकता नहीं है सिर्फ पेट भरा जा सकता है... पीने को पानी तो है मगर इसमें शुद्धता का नामोनिशान नहीं... साँस लेने को हवा तो है मगर जहर घुली हुई... रहने को घर तो हैं मगर घरों में आपसी प्यार और भाईचारा नहीं...

दूर-दूर तक पेड़-पौधों से शृंगार को तरसती धरती... विकास के नाम पर बढ़ते कांक्रीट के जंगल और गाँवों में पगडंडियों को लीलती कोलतार की सड़कें मानो खुशहाली के सीने में किसी ने खंजर घोप दिया हो... आवासीय कॉलोनियों में तब्दील होती कृषि योग्य भूमि... और इन सबके साथ-साथ मशीन के रूप में ढलता इंसान... रोबोट बनता हुआ.. शायद किसी बेहद डरावने सपने का जिक्र किया जा रहा है... नहीं। ये कोई सपना नहीं है... ये वो हकीकत है जिसका सामना हम आने वाले कुछ ही सालों में करने वाले हैं...

इसमें आश्चर्य कैसा... आश्चर्य तो तब होता, जब सब कुछ इसका उल्टा यानि की खुशहाल और हरा-भरा होता...

हर रोज और हर ओर होते जनसंख्या विस्फोट के साइड इफेक्ट तो सहने ही पड़ेंगे ना...।

मीनाक्षी सुकुमारन

जन्मतिथि- 18 सितम्बर, नई दिल्ली
वर्तमान पता-डी 214 रेलनगर प्लाट नं. 1 सेक्टर 50 नोएडा (यूपी)
मोबाइल/व्हाट्सएप-9810862418
शिक्षा-एमए (हिन्दी) एमए (इंगलिश)
कार्यक्षेत्र- लेखन
विधा-छंद मुक्त कविता, लेख, कहानी
प्रकाशन-''भाव सरिता'' व ''अहसास ए अल्फाज़'' एकल काव्य संग्रह प्रकाशित। सांझा संग्रह-2014 से 2018 अब तक प्रकाशित 37 काव्य संग्रह, 6 कहानी व 2 समीक्षा, 1 विचार मंथन संकलन।
सम्मान-1. ''साहित्य गरिमा'' सम्मान 2014, 2. साहित्य गौरव पुरस्कार 2014, 3. नारी गौरव सम्मान 2015, 4. काव्य गौरव सम्मान 2015, 5. माँ शारदे उत्कर्ष सम्मान 2015, 6. दीप शिखा सम्मान 2016, 7. शब्द कलश सम्मान 2016, 8. साहित्यकार सम्मान 2016, 9. युग सुरभि सम्मान 2016, 10. नारी सागर सम्मान 2016, 11. श्रेष्ठ शब्द शिल्पी सम्मान सम्मान 2016, 12. राष्ट्रीय स्त्री शक्ति सम्मान 2016, (गंतव्य संस्थान द्वारा), 13. साहित्य गौरव सम्मान 2016 (युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच द्वारा), 14. अमृत सम्मान 2016, 15. प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान 2016, 16. हिन्दी साहित्य गौरव 2016, उत्कर्ष प्रकाशन द्वारा 17. हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान, 18. विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा विद्यावचस्पति उपाधि प्रदान, 19. मीडिया गौरव सम्मान-2017, 20. प्राइड ऑफ वीमेन अवार्ड 2017, 21. हिन्दी सागर सम्मान 2017, 22. श्रेष्ठ साहित्य सृजक सम्मान 23. साहित्य सारथी सम्मान 2017, 24. श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान 2017, 25. सरस्वती सम्मान, 26. दिव्यतूलिका साहित्यायन'' सम्मान, 27. श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा), 28. ''विश्व हिंदी कथाशिल्पी सम्मान'' विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा द्वारा, 29. ''काव्य गौरव सम्मान'' साहित्य सागर राष्ट्रीय साहित्यिक हिन्दी मंच द्वारा 30. काव्य रंगोली साहित्य भूषण सम्मान 2017, 31. ''शब्द शब्द समिधा सम्मान' ''शब्द सृजन सम्मान'', ''साहित्य जगत के स्वर्ण स्तम्भ सम्मान'', कलमकलाधर, कलमवीर सम्मान, ग्वालियर साहित्य कला परिषद ग्वालियर (मप्र) द्वारा 32. हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान, 33. अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018, 34. भाषा सारथी सम्मान, 35. डायमंड एचीवर अवार्ड 2018, 36. स्पेशल जूरी अवार्ड 2018
अन्य उपलब्धियाँ-आकाशवाणी नई दिल्ली (युवावाणी), राष्ट्रीय सहारा, संडे मेल से प्रारंभ अनेकों ई पत्रिका, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में लेख, कहानी, कविता आदि निरंतर प्रकाशित।
लेखन का उद्देश्य-अपने भावों और अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से संवाहित करना।

प्यार के फूल

आओ रोप दें कुछ
प्यार के फूल
पत्थर की सर-ज़मीन पर
कुछ सांसें तो बच जाएँ
दम तोड़ने से
इस सर-ज़मीन पर!!

आओ रोप दें कुछ
फूल मुस्कुराहाटों के
दिल की सर-जमीन पर
कुछ तो निकल जाएँ
कांटे नफरतों के
इस सर-ज़मीन पर!!

आओ कुछ तो बोयें ऐसा
बबूल के दिलों में खिल
जाएँ फूल गुलाब के
महक जाए
जीवन फिर
इस सर-ज़मीन पर!!

रेखा जोशी

जन्मतिथि- 21.06.1950, अमृतसर
वर्तमान पता- 565/16ए, फरीदाबाद, हरियाणा 121002 हरियाणा
मोबाइल/व्हाट्सएप-9990251577
शिक्षा-एमएससी (भौतिक विज्ञान) बीएचयू
आजीविका-अध्यापन
विधा-:छंद मुक्त, ग़ज़ल, लघुकथा, कहानी, गीत, गीतिका
प्रकाशन-अनेक सांझा संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित, ब्लॉग लेखन व कई इ पत्रिकाओं में प्रकाशन, कई जानी मानी हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में लेख एवं कहानियों का प्रकाशन
कार्यकाल में ऑल इंडिया रेडियो, रोहतक से विज्ञान पत्रिका के अंतर्गत अनेक बार वार्ता प्रसारण
सम्मान-कार्यकाल में बेस्ट टीचर सम्मान
ब्लॉग-http://rekhajoshi.blogspot.in/
लेखन का उद्देश्य-सामाजिक जागृति

नारी सशक्तिकरण

नारी तेरी वह कहानी, सीने में दूध आँखों में पानी, लेकिन कब तक, सदियों से बार-बार वही कहानी दोहराई जा रही है। हमारे देश में जहाँ नारी की पूजा होती है, उसी देश में नारी की ऐसी दुर्दशा, इस पुरुष प्रधान देश में नारी की शक्ति को सदा दबाया गया है। हालांकि समय के चलते समाज में जागरुकता आई है, लेकिन अभी भी नारी को जो सम्मान मिलना चाहिए उससे वह अभी कोसों दूर है।

आज़ादी से पहले की नारी की छवि का ध्यान आते ही एक ऐसी औरत की तस्वीर आँखों के आगे उतर कर आती है, जिसके सिर पर साड़ी का पल्लू, माथे पर एक बड़ी सी बिंदिया, शांत चेहरा और हमेशा घर के किसी न किसी कार्य में व्यस्त, कई बार तो सिर का पल्लू इतना बड़ा हो जाता था कि बेचारी अबला नारी का पूरा चेहरा घूँघट में छिप कर रह जाता था। उसका समय अक्सर घर की दहलीज के अंदर और पुरुष की छत्रछाया में ही सिमट कर रह जाया करता था। अधिकतर परिवारों में बेटा और बेटी में भेदभाव आम बात थी। नारी का पढ़ना-लिखना तो बहुत की बात थी, समाज में ऐसी अनेक कुरीतियाँ, बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा आदि पनप रही थी, जिसका सीधा प्रभाव नारी को भुगतना पड़ता था, लेकिन समय के चलते मदनमोहन मालवीय जैसे कई समाजसेवी आगे आए और धीरे-धीरे ऐसी कुप्रथाओं को समाप्त करने के बारे में लोगों में जागरुकता बढ़ी और कालान्तर समाज का स्वरूप बदलने लगा।

आज इक्सिवीं सदी की महिलाएं घूँघट को पीछे छोड़ते हुए बहुत आगे निकल आई है। आज की नारी घर की दहलीज से बाहर निकल कर शिक्षित हो रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सफलता की सीढ़िया चढ़ती जा रही है। आर्थिक रूप से अब वह पुरुष पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसकी सहयोगी बन अपनी गृहस्थी की गाड़ी को सुचारू रूप से चला रही है। बेटा और बेटी में भेद न करते हुए अपने परिवार को न्योचित करना सीख रही है, लेकिन अभी भी यह समाज में अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्षरत है, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों का उसे सामना करना पड़ रहा है। भले ही समाज में खुले घूम रहे मनुष्य के रूप में जानवर उसकी प्रगति में रोड़े अटका रहे हैं, लेकिन उसके अडिग आत्मविश्वास को कमजोर नहीं कर पाए। हमारे देश को श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिलजी, कल्पना चावला जैसी भारत की बेटियों पर गर्व है, ऐसा कौन सा क्षेत्र है, जिसमें आज की नारी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन न कर पा रही है। आज नारी बदल रही है और साथ ही समाज का स्वरूप भी बदल रहा है, वह माँ बेटी, बहन, पत्नी बन कर हर रूप में अपना कर्तव्य बखूबी निभा रही है।

माँ, अपने बच्चों की प्रथम गुरु होती है और किसी भी राष्ट्र के निर्माण में एक माँ के योगदान को कोई नहीं झुठला सकता। भारतीय नारी से की वह देश की भावी पीढ़ी में अच्छे संस्कारों को प्रज्जवलित किया जा सकता है, सशक्त नारी ही उन्हें सही और ग़लत का अंतर बता कर उनका मार्गदर्शन कर सकती है। अपने बच्चों में देशभक्ति की भावना प्रबल करते हुए एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।

इसलिए नारी सशक्तिकरण केवल दिखावे और भाषणों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे वास्तविकता के उतारने की जरूरत है।

विश्व से पर्वत सी टकरा सकती है महिला
विश्व को फूल सा महका सकती है महिला
विश्व के प्रांगण में वीरांगना लक्ष्मी है महिला
विश्व फिर भी कहता है अबला है महिला।

श्रीमती ज्ञान्तीसिंह

साहित्यिक उपनाम-डॉली, मधु
जन्मतिथि- 1.1.1966, कैमूर जिला-बिहार
वर्तमान पता- सेवियर पार्क-ए-2, फ्लैट नंबर 1503, माला-15, मोहन नगर के पास, गाजियाबाद-6, उत्तरप्रदेश
मोबाइल/व्हाट्सएप-9953800505
शिक्षा-12 कक्षा
कार्यक्षेत्र- दिल्ली और एनसीआर
सम्मान-चार से पाच सम्मान साहित्य जगत में
अन्य उपलब्धियां-एनजीओ के साथ मिलकर बहुत से कार्य करना
लेखन का उद्देश्य-समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार करना

तैयारी नए साल की

नए साल की नई कहानी
इस बार नई कलम से लिखेंगे
बीता जो कुछ अपने दिल पर
उसका ना कोई हाल लिखेंगे

कहना-सुनना न अब कोई
अब तो सब कुछ खुशहाल लिखेंगे
बर्बाद हुए हो तो क्या गम है,
असली सुरते हाल लिखेंगे

किस्से-कहानी जो हम बने
उनका भी कुछ हाल लिखेंगे
दिखलाना होगा जब जख्म तो,
टूटे दिल का कुछ ख्याल लिखेंगे

आशा के दीपक जो बने उन पर
जाकर उनको कुछ पैगाम लिखेंगे
सोये जो मिल जाएंगे उनको जगाकर
उनका भी कुछ संदेस पैगाम लिखेंगे

आंसू आहों से जो तड़प रहे होंगे
मित्र बनकर उनके खातिर सुबह-शाम लिखेंगे
मिलने-जुलने के कुछ राग-दरबार लिखेंगे

गीतों के शब्द खोज उनके अर्थ लिखेंगे
ग़ज़लों के अर्थ खोजकर उनके शब्द लिखेंगे
अपने क्यों हुए बेगाने उस पर कुछ विचार लिखेंगे
आ जाना तुम भी मिलने को तुम पर ग़ज़ल लिखेंगे।

कविता वर्मा

जन्मतिथि- 26/3/1969, टीकमगढ़
वर्तमान पता-542, तुलसीनगर बॉम्बे हॉस्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
मोबाइल/व्हाट्सएप-09827096767
शिक्षा-एमएससी
कार्यक्षेत्र- शिक्षण/लेखन
सामाजिक क्षेत्र-सचिव मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन इन्दौर
विधा-कहानी लेख लघुकथा उपन्यास
प्रकाशन-कहानी संग्रह ''परछाइयों के उजाले''
सम्मान-अखिल भारतीय सरोजिनी कुलश्रेष्ठ कहानी संग्रह पुरस्कार
शब्द निष्ठा सम्मान
ब्लॉग-कासे कहूँ?
लेखन का उद्देश्य-सामाजिक विसंगतियों के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना

अंतर

''भैया चाय अभी बना दूं या आप बनाकर पी लेंगे मुझे किटी पार्टी में जाना है।'' सुनंदा ने अपने देवर से पूछा जो दो दिन की छुट्टी में होस्टल से घर आया था।

''क्या भाभी आप भी पढ़ी-लिखी होकर मूढमगज अमीर औरतों की तरह किटी पार्टी में जाती है। कुछ सार्थक किया करिये किटी में होता क्या है इसकी उसकी सास, ननद और कामवालियों की बातों के अलावा।''

बात तो चुभने वाली थी, लेकिन किटी में जाने से पहले और दो दिन के लिए घर आए देवर से कोई कड़ी बात कहने से सुनंदा बचना चाहती थी।

उसे चुप देखकर अमित को बल मिला ''भाभी किटी में औरतें अपने गहने, कपड़ों की नुमाइश ही तो करती हैं और खाना-पीना। आप पढ़ी-लिखी है आपको यह सब करने का मन कैसे होते है?''

''भैया कल रात आप बहुत देर से आए थे कहां रह गए थे?'' सुनंदा ने बात बदलते हुए कहा।

''भाभी कल हम कॉलेज के दोस्तों ने मिलने का प्रोग्राम बनाया था हम सब एक रेस्तरां में मिले कौन कहां है क्या कर रहा है, सबकी जानकारी लेते देते रहे। अब सभी बिजी हैं बार-बार मिलना तो होता नहीं है। बस देर तक गप्पे होती रही।''

''अरे मुझे लगा किसी का बर्थडे था आप नए कपड़े पहन कर गए थे।''

''अरे वो तो बस ऐसे ही थोड़ी झांकी भी तो जमाना पड़ती है।''

''आपका वो एक दोस्त था धीरज वो भी आया था?''

''नहीं भाभी वो तो मुम्बई में है वो नहीं आया, लेकिन कल सुना वह किसी के साथ लिव इन में है मजे कर रहा है। कल बहुत मजे लिए उसके।''

''कुछ खाया पिया भी या बस बातों से ही पेट भर लिया?''

''अरे भाभी गप्पों के साथ तो भूख ज्यादा ही लगती है हमने भी खूब खाया।''

सुनकर सुनंदा के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, जिसे देखकर अमित अचकचा गया वह यह तो समझ गया कि भाभी की बातों का कोई मतलब है, लेकिन क्या एकदम से समझ नहीं पाया।

उसके चेहरे पर उलझन देख सुनंदा धीरे से बोली ''बस आपकी मीटिंग मिलना-जुलना एक-दूसरे के बारे में बातें खाना-पीना किटी नहीं कहलाता।''

माधुरी मिश्रा

जन्मतिथि
20/10/45
कटिहार (बिहार)
वर्तमान पता
माधुरी मिश्रा/डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्रा आरबीएस, 364-ए, पचपेढ़ी, जबलपुर, मध्यप्रदेश
मोबाइल/व्हाट्सएप
9669017285
शिक्षा
एमए समाजशास्त्र
कार्यक्षेत्र
परिवार
विधा
कहानी, लेख, गद्य में सब कुछ
प्रकाशन
मैथिली पत्रिका ''मैथीला मिहिर'' में 1970-1980 विभिन्न लेख और कहानियां
लेखन का उद्देश्य
सुधार एवं आत्मसंतुष्टि

महिला सक्षमीकरण

''सक्षमीकरण'' शब्द मेरे लिए नया है। बहुत सोचने पर इस शब्द की परिभाषा जो मेरी समझ में आई, वह यह कि-''कर्म, वचन और मनन स्वतंत्र रूप से करने में जिसे किसी बी आज्ञा या सहायता की आवश्यकता नहीं हो, वही सक्षम है और इसे क्रिया में रूपान्तरित कर प्रदर्शित करना ही सक्षमता है।'' जैसे-समाज से समाजीकरण, सरल से सरलीकरण वैसे ही सक्षम से सक्षमीकरण।

आज प्रश्न उठाया गया है, स्त्रियों की सक्षमीकरण पर तो मुझे तो नहीं लगता कि स्त्रियां कितनी सक्षम है, बताने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता है।

इतिहास के पन्नों को पलट के देखे तो पाएंगे कि वैदिककाल में स्त्रियां सर्वाधिक सक्षम थी, क्योंकि उन्होंने अपने बल पर स्वयं को शिक्षित और अनुशासित किया था। मैत्रयी और गार्गी जैसी विदुषियों ने वैदिक सूत्रों और श्लोकों की रचना की थी। साथ ही उन्होंने अपने त्याग और समर्पण का अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत विपरीत परिस्थितियों में भी सक्षम नारियां सफल रही, तभी तो महारानी सीता ने पुत्रों को जन्म देने पश्चात वन में रहकर भी लव-कुश को योद्धा के साथ ही स्वाभिमानी और संस्कार संपन्न भी बनाया। द्रोपदी चाहती तो बच्चों के साथ हस्तिनापुर में रुक सकती थी, लेकिन पुत्रों के मोह को त्याग, उन्हें सुभद्रा के संरक्षण में दे, वह निकल गई, अपने पतियों के साथ उनके सुख-दुख में साथ देने और प्रतिशोध की ज्वाला शान्त न होने देने के लिए।

प्रत्येक युग काल और समाज में स्वाभिमानी उच्च आदर्श और चरित्र वाली साहसी नारियों ने अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखवाया है।

मुगलकाल में अवश्य स्त्रियों की स्थिति दबी-दबी पर्दे के पीछे रही, बाल विवाह की शुरुआत के चलते, स्त्रियों की शिक्षा पर ध्यान न देकर, सुरक्षा के लिए उन्हें घर के अंदर रखा जाने लगा, जो अनुचित था और यहीं से शुरू हो गई स्त्रियों में अशिक्षा, हीनभावना और भय। लेकिन जैसा होता है कुछ स्त्रियां मुगल और अंग्रेज दोनों शासन काल में डटकर अपने दुश्मनों के सामने खड़ी रही और अन्त तक हार नहीं मानी।

वर्तमान में भी जब हमारी स्वतंत्रता के सत्तर साल हो गए, अपनी सरकार अपना शासन सब कुछ है, सरकार ने बहुत सारी योजनाएं बनाई और बना रही है, स्त्रियों की शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलम्बन के लिए तो एक भीषण समस्या आ खड़ी हुइ बलात्कार की, हत्या की। मन में एक आवाज उठती है, होगा इसका भी अन्त होगा और स्त्रियां तथा लड़कियां ही करेगी, इन राक्षसों का संहार। जैसा मां दुर्गा ने किया था, क्योंकि स्त्रियों का 'सक्षमीकरण' हो चुका है और हो रहा है।

अंजली खेर

जन्म स्थान- जबलपुर
वर्तमान पता- सी, 206, जीवन विहार, अन्नपूर्णा बिल्डिंग के पास, कोटरा, पी एंड टी चौराहा, **भोपाल-**462003 मप्र
मोबाइल/व्हाट्सएप-9425810540
शिक्षा-एमकॉम
कार्यक्षेत्र- भारतीय जीवन बीमा निगम में विगत 25 वर्षों से कार्यरत।
सामाजिक क्षेत्र-यू-ट्यूब पर सामाजिक उत्थान उद्देश्यपरक 10-11 कहानियां ''कहानियों के सफर'' शीर्षित चैनल पर प्रसारित।
विधा-कहानी, आलेख
प्रकाशन-वर्ष 2017 में ''शतरंज और जीवन प्रबंधन'' शीर्षित पुस्तक प्रकाशित हुई
सम्मान-अभी इंतजार हैं
अन्य उपलब्धियाँ-आकाशवाणी भोपाल से महिला सभा और चिंतन कार्यक्रम में आलेख प्रसारित, बिग एफ एम रेडियो चैनल पर ''हीरो ख्वाबों का सफर'' कहानी प्रतियोगिता में लिखी कहानी भारत भर में द्वितीय स्थान पर रही, यू-ट्यूब पर प्रसारित ''मेरे पापा, मेरे आदर्श'' कहानी ने अंगदान के महती संदेश को देशभर में प्रसारित कर लोगों को इस हेतु प्रेरित किया। विगत दस वर्षों से गृहशोभा, गृहलक्ष्मी, वनिता, जागरण सखी, अहा जिंदगी पत्रिकाओं में 1000 से ज्यादा आलेख प्रकाशित एवं कुछ पुरस्कृत।
लेखन का उद्देश्य-समाज में व्याप्त विसंगतियों, कुरीतियों को दरकिनार कर नई सोच को अंजाम देना

आज दिल की हर बात कहां हैं

ब्रह्मा का पहली सुखनिंदा में छोड़ा निःश्वास हूँ मैं
तपती धूप में शीतल छांव का अहसास हूँ मैं।
मैं फूलों की तरह कोमल फूल हूँ, कांटे की तरह चुभता शूल भी हूँ।
कमजोर-असहाय समझ, मुझे मसलने की कोशिश ना करना।
कोई मेरे जज्बातों से कोई खेले, तो रण चंडी का त्रिशूल भी हूँ मैं।
नन्हें-नन्हें परों से भरती हूँ ऊंची-ऊंची उड़ान
अपनी काबिलियत से बनाई है मैंने अपनी पहचान।
बहुत हुए अत्याचार, अब और नहीं कुछ सहना है
तोड़ के चुप्पी आज दिल की हर बात कहना है।

खुशियों के इंद्रधनुषी रंग संजते हैं हमसे
चार-दिवारी का मकान, घर बना हैं हमसे।
मत ठेस पहुँचाना कभी तुम मेरी भावनाओं को
तुम्हारी हर सुबह, हर शाम है हमसे।
हृदय कर रहा क्रंदन, मन चीख-चीख कर रहा पुकार
हैं कोई संसार में जो करे मुझसे, बिना शर्त के प्यार।
मैं भी इंसान हूँ, मुझे भी है जीने का बराबर अधिकार
अब हम मिलकर बदलेंगे अपने प्रति समाज के विचार।

नहीं हूँ मैं असहाय और अबला
नहीं मांगती किसी से सम्मान-दया की भीख।
मुझे हैं अपनी काबिलियत पर भरोसा
योग्यता से सब हासिल करना, मैंने लिया है सीख।
शिक्षित हूँ, स्वावलंबी हूँ, मुझे है खुद से प्यार बेशुमार
हौंसला हैं, आत्मविश्वास हैं, यही हैं मेरी पहचान।
पढ़ती हूँ, समाज को देती हूँ सफलता के नित-नए पैगाम
हमारे सशक्तिकरण बिना देश की नहीं हैं आन-बान-शान।
बहुत हुए अत्याचार, अब और नहीं कुछ सहना है
तोड़ के चुप्पी आज दिल की हर बार कहना है।

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

जन्मतिथि- 24 दिसम्बर 1956 बरेली (यूपी)
शैक्षिक योग्यता-एमए (हिंदी साहित्य) एमए (संस्कृत साहित्य) बीए एड, एलएलबी
संपर्क सूत्र-बी-201, सिक्का क्लासिक होम्स, जी एच 249, कौशाम्बी, गाजियाबाद, (यूपी) पिन-201010, फोन नं.-9654258770
मेल आईडी-mehta.neerja24@gmail .com
सम्प्रति-कवयित्री/लेखिका
विधा-छंदमुक्त, गीत, मुक्तक, हाइकू, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख।
प्रकाशन विवरण-(1) प्रकाशित एकल कृतियाँ-''मन दर्पण'' (काव्य संग्रह) 2016, ''नीरजा का आत्ममंथन'' (काव्य संग्रहः 2016, ''उमंग'' (बाल काव्य संग्रह) 2017, ''परछाइयाँ'' (संस्मरण) 2017, (2) अब तक लगभग 40 साझा काव्य संग्रह, लघु कथा व कहानी संग्रह प्रकाशित। (3) पत्र पत्रिकाएं-देश विदेश के अनेकों पत्र-पत्रिकाओं व ई-पत्रिकाओं में लगभग 400 से अधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।
सम्मान विवरण- साहित्य क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं/समूहों द्वारा अनेकों बार (40-45 सम्मान प्राप्त) सम्मानित।
लेखन का उद्देश्य-अपने विचार साझा करने के साथ समाज में जागरुकता लाना और पाठन सामग्री उपलब्ध कराना।
''नीर से जन्मी नारी''

मैं हूँ नीर से जन्मी नारी

पानी सा कोमल मेरा एहसास,
जल सा पारदर्शक मेरा मन,
सलिल सी तृप्त करती मेरी अनुभूति,
वारि सा शांत मेरा स्वभाव,
तोय सी स्वच्छ मेरी देह,
हर रंग जिसमें घुल जाए
ऐसी मैं अम्बु सी रंगहीन,

हां, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी।

आत्मा को सुख देती वृष्टि सी
नेह बरसाती मैं,
जल से भीगी भीनी माटी की सुगंध सी
प्यास बुझाती मैं,
सागर के नीले हरे मिश्रण सी
तरंगित करती मैं,
उपवन की क्यारियों में
महकती उदक सी,
आब में खिलती कमल सी,

हाँ, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी
न मैं पौरुष से हारी,
न मैं स्त्रीत्व से ठगी गयी,
मैं बाल अरुण की
लालिमा सी तेजस्विता,
मैं उज्जवल चाँद सी चंद्रमुखी,
मैं भू पर विस्तृत
चंद्रिका सी शीतल,
मैं कमलपत्र की
तुषार बूँदों सी कोमल,
मैं गुलाब की पंखुड़ियों सी
नर्म एहसास देती,
जल सी पावन
हाँ, मैं हूँ नीर से जन्मी नारी
कहलाती हूँ 'नीरजा कमलिनी'।

पिंकी परुथी ''अनामिका''

जन्मतिथि- 22.10.70

शिक्षा-बीई (इलेक्ट्रिकल 1991)

कार्यक्षेत्र- गृहिणी, समाजसेविका (विशेष महिला साक्षरता एवं बाल कल्याण एवं जरूरतमंद मरीजों के लिए कार्यरत)
लेखिका (सभी विधाओं में)

प्रकाशन-साझा संकलन
1. जेएमडी प्रकाशन-नारी काव्य सागर (काव्य संग्र), 2. अर्णव कलश एसोसिएशन-सुगंध परिवेश की (काव्य संग्रह), 3. केबीएस प्रकाशन-अपूर्वा (गीत-नवगीत संग्रह), 4. केबीएस प्रकाशन-विचार मंथन (आलेख संग्रह), 5. केबीएस प्रकाशन-स्पंदन (काव्य संग्रह), 6.जेएमडी प्रकाशन-हिन्दी सागर (काव्य संग्रह), 7. नूतन साहित्य कुंज-कुंज निनाद (काव्य संग्रह), पत्रिका ब्यूरो (बारां), लोकजंग (भोपाल), वर्तमान अंकुर (नोएडा), डालटा एक्सप्रेस (गाजियाबाद) से प्रकाशित पत्रिकाओं में 70 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित (एक वर्ष में)

सम्मान-1. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा-श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान 2017, 2. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा-पं. माधवप्रसाद मिश्र कलम की सौगंध सम्मान, 3. मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं अंतरा शब्द शक्ति द्वारा अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, 4. मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा-भाषा सारथी सम्मान, 5. काव्यांचल द्वारा-काव्य मेघ सम्मान, 6. काव्यांचल द्वारा-काव्य शिखर सम्मान।

माँ

माँ,
मैं तुम्हारा,
मखमली स्पर्श पाकर,
खिल जाता हूँ।
कितने यत्न करती हो तुम,
मुझ पर वात्सल्य लुटाने के,
घर का काम,
मेरा दुग्धपान
व्यवस्थित हो,
हर सम्मान।
जाने कितने रातजगे,
प्रसव पीड़ा,
शरीर की दुर्बलता,
भूल जाती हो।
मेरी खिलखिलाहट से,
मेरे मुस्कुराने से।
हाँ माँ,
मैं तुम्हें,
सुखद अनुभूतियाँ,
देने के लिए
अवतीर्ण हुआ हूँ।
तुम्हारे,
दुःख दर्द, पीड़ा को,
अवशोषित कर,
आनंद और सुख के,
ये आल्हादित क्षण,
स्मृतियों में बसकर,
हृदय को,
शीतल करने।

अर्विना गहलोत

जन्मतिथि- 1969, नगला दलपतपुरा जिला बुलंदशहर
वर्तमान पता- डी 77 विद्युत नगर एनटीपीसी दादरी
जिला गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल/व्हाट्सएप-9958312905
शिक्षा-एमएससी बांटनी, वैद्य विशारद
कार्यक्षेत्र- हाउस वाइफ
विधा-स्वतंत्र
प्रकाशन-दी कोर, क्राइम आप नेशन, घरौंदा, साहित्य समीर प्रेरणा अंशु साहित्य समीर नई सदी की धमक, दृष्टि, शैल पुत्र, परिदै बोलते है भाषा सहोदरी महिला विशेषांक, संगिनी, अनुभूति, सेतु अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, समाचार पत्र हरिभूमि, समाज्ञा, डाटला टू टाइम्स दिन प्रतिदिन, सुबह सवेरे, साश्वत सृजन, लोक जंग अंतरा शब्द शक्ति, खबर वाहक, गहमरी अचिंत्य साहित्य डेली मेट्रो वर्तमान अंकुर नोएडा, अमर उजाला डीएनस दैनिक न्याय सेतु
सम्मान-प्रतिलिपि, सर्वश्रेष्ठ कवयित्री
ब्लॉग-मेरे अल्फाज़
लेखन का उद्देश्य-समाज को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करना।

प्रेम गिरह

दिल पे बांधी है गिरह
प्रेम के धागों से पल्लू में अपने।
जो छूटे ना जीवन पर्यन्त।
चाहे हो कष्ट अनंत।
हे भगवन्त।
आकाश सा हो असीम।
देखने में हसीन हो।
मन में गुनगुनाहट सा।
दिल यादों से गुदगुदाता सा।
प्रेम को नाप नहीं सकती।
ऐसी तो कोई तराजू बनी नहीं।
जो तुम को तोल कर दिखलाए।
प्रेमबस इतना किस तरह दिखलाए।
मेरी आंखों में छवि देखकर संवर जाए।
भोली सी सूरत अभिव्यक्ति की मूरत।
निरखत मन बारंबार सोलोन सजन।
देखो तो सही महके मेरा मन।
वीणा के तारों सा झनकृत मेरा मन।
बाँधा है मुट्ठी भर दिल में प्यार।
एक सुनहरा प्यार का संसार।
मैं हूँ तुम हो मेरे दिलदार।
तुम्हारे होठों पे मेरा नाम।
तबस्सुम बनकर उभरता है।

डॉ. नीना छिब्बर

साहित्यिक उपनाम-कोकिला
जन्मतिथि- 7.8.1955, दिल्ली
वर्तमान पता- 17/653, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 राजस्थान
मोबाइल/व्हाट्सएप-09461029319
शिक्षा-एमए (हिंदी, अंग्रेजी) बीएड, पीएचडी (हिंदी)
कार्य-सेवानिवृत्त अंग्रेजी व्याख्याता
विधा-लघुकथा लेखन, कविताएं, बाल कथाएं एवं कविता
प्रकाशन-1 आकांक्षा की ओर (काव्य संग्रह), 2. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में असामान्य पात्र। 3.सांझा लघुकथा संग्रह-(खिड़कियों में टंगे लोग, किस को पुकारू, कन्या भ्रूण हत्या संबंधी कथाए, एक सौ इक्कीस लघुकथाएं, आसपास गुजरते हुए, दीप देहरी पर, सहोदरी सोपान, कथादेश, हिंदी की समकालीन लघुकथाएं), 4. सांझा काव्य संग्रह- (सहोदरी काव्य 3/4, ... अविरल धारा, पर्दे के पीछे की बेखौफ आवाजें, शब्द शब्द महक, शब्दों की अदालत में), 5. वेब मेगज़ीन-हस्ताक्षर वेब मेगज़ीन, साहित्य सुधा वेब, मातृभाषा, काम, प्रतिलिपि, काम), 6. पत्रिकाएं-काव्य रंगोली, नवल मासिक, सृजन कुंज, महिला विशेषांक, कथा बिंब, मधुमती), 7. देश के विभिन्न समाचार पत्रों में लेख, समसामयिक विषयों पर।
सम्मान/पुरस्कार- 1. कथादेश अखिल भारतीय लघुकथा प्रतियोगिता में पाँचवा स्थान।, 2. उदीप्त प्रकाशन.... काव्य भूषण सम्मान, 3. उदीप्त प्रकाशन... लघुकथा श्री सम्मान, 4. ... अर्णव कलश एसोसिएशन-हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान 2017 हरियाणा स्वर्ण जयंती उत्सव। 5. काव्य रंगोली साहित्य भूषण सम्मान 2017, 6. ऑनलाइन विराट कवि सम्मेलन, ऐरावत अलंकरण सम्मान। 7. भाषा सहोदरी हिंदी... प्रशस्ति पत्र।

स्त्रीत्व

स्त्री जब बेटी बनी
संस्कारों से घिरी पूर्णता के लिए
माँ बनने के स्वप्न देखती थी।।
स्त्री जब माँ बनी
संस्कारों के संग पुत्रवती होकर
सौभाग्यवती बनी।।
स्त्री जब पुत्रवती बनी
स्वप्नों के आकाश पर
इंद्रधनुब बनकर छा गई।।
स्त्री, माँ रूप में पुत्रवधू लाई
अपने ही पुत्रवती होने की छलना से
खूब छली गई।।
स्त्री जब बूढ़ी हुई
अपने हाथों से अपने दुखते पैरों को
दबाने का दर्द ही, समझ न पाई।।
बूढ़ी माँ होकर
स्त्री फिर इंतजार कर रही है
बेटी
पुत्रवधू
और माँ होने का अर्थ।।

डॉ. दीप्ति गौड़

साहित्यिक उपनाम-''दीप''
जन्मतिथि- 15 दिसम्बर-ग्वालियर, मध्यप्रदेश
वर्तमान पता- सी-11, वीणापाणि निकुंज, प्रगति विहार कॉलोनी, गोला का मंदिर, ग्वालियर 474005 मध्यप्रदेश
मोबाइल/व्हाट्सएप-9713679207
शिक्षा-एमए (भूगोल, हिंदी साहित्य, मनोविज्ञान), एमएड, पीएचडी, पीजी डिप्लोमा इन साइक्लोजिकल काउंसिलिंग, पीजी डिप्लोमा इन योगा एंड मेडिटेशन, डिप्लोमा इन जर्नलिज्म, स्वर्णपदक द्वय।
कार्यक्षेत्र- शिक्षिका, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1, ग्वालियर मप्र
सामाजिक क्षेत्र-लेखन, पर्यटन, मंच संचालन, अभिनय, योग, समाज सेवा, खगोल विज्ञान प्रचार-प्रसार।
विधा-गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, दोहे, हाइकू, कहानी, लेख, निबंध, समीक्षा।
प्रकाशन-देश के अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाओं व शोध पत्रों का प्रकाशन।
प्रकाशित कृति-काव्य संग्रह 'देहरी का दीप', साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद संस्कृति विभाग भोपाल के सहयोग से प्रकाशित, प्रथम संस्करण 2017
सम्मान-सर्वांगीण दक्षता हेतु भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम स्व. डॉ. शंकरदयाल शर्मा स्मृति स्वर्ण पदक, ग्वालियर विकास समिति द्वारा ''ग्वालियर गौरव सम्मान'' जेसीआई एक्सीलेंसी द्वारा सलाम ग्वालियर ''अद्वितीय युवा प्रतिभा'' अवार्ड, प्रभात रत्न अलंकरण'' अवार्ड, विपिन जोशी स्मारक समिति इटारसी द्वारा ''अक्षरदूत राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान'', सरस्वती काव्य संगम झांसी की ओर से ''काव्य श्री सम्मान'', स्व. मनोज रावत खेल अकादमी द्वारा ''शब्द-सृजन सम्मान'', बेटी है तो कल है संस्था द्वारा ''नारी शक्ति तुझे सलाम'' अवार्ड, जेएमडी प्रकाशन नई दिल्ली की ओर से ''नारी गौरव अवार्ड'', द फेथ ऑफ पब्लिक संस्था द्वारा साहित्य सम्मान, हिंदी परिवार ग्वालियर इकाई द्वारा युवा रचनाकार सम्मान, गहमर वेलफेयर सोसायटी गाजीपुर द्वारा तेजस्विनी सम्मान, साहित्यिक पत्रिका काव्य रंगोली लखीमपुर खीरी उप्र द्वारा साहित्य भूषण सम्मान अनेक पुरस्कार।
ब्लॉग-अनुभूति के छंद कवयित्री डॉ. दीप्ति गौड़ 'दीप'
अन्य उपलब्धियाँ-अनेक अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में सहभागिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य चैनल्स पर काव्य पाठ का प्रसारण।
लेखन का उद्देश्य-अपने गीतों से माधुर्य, प्रेम, अनुभूति, सरसता और वैयक्तिकता का अनूठा राग छेड़ा है।

बेटी घर की फुलवारी

बेटी खुशबू जीवन की बेटी घर की फुलवारी है।
बेटी से परिवार है रोशन बेटी सबकी प्यारी है।

दो-दो कुल की लाज है बेटी, मान सदा सबका रखती है।
उसके दम से है उजियारा वो शम्मा-सी जलती है।
बेटी घर आँगन की शोभा बेटी घर की क्यारी है।

मात-पिता का नाम निखारे, सपने नए संजोती है।
अंतर्मन में पीड़ा सहती, छुप-छुप नयन भिगोती है।
बेटी से घर में खुशहाली, सबकी वही दुलारी है।

भेदभाव को तेज कर प्यारे, बेटी का कल्याण करो।
भ्रूण हत्या पर रोक लगाओ रक्षा का अनुष्ठान करो।
बेटा-बेटी एक बराबर, बेटी देश की नारी है।

आरती प्रियदर्शिनी

जन्मतिथि- 15.02.1981, मुजफ्फरपुर (बिहार)
कार्यक्षेत्र- गोरखपुर (उत्तरप्रदेश
शिक्षा-हिन्दी में स्नातकोत्तर, DCH (Diploma in creative writing in Hindi)
पूरा पता-आरती प्रियदर्शिनी धनंजय कुमार सिंह, मकान नंबर 63 ए (मंदिर) सेक्टर नंबर 3, जंगल सालिकराम शिवपुर शाहबाजगंज, गोरखपुर (यूपी) 273014, मो.-7860910843, 9648555539
विधा-कहानी, कविता, निबंध तथा लघुकथा।
प्रकाशित रचना- यही प्यार है (कहानी मुक्ता), दंगे वाली दुल्हन (कहानी-गृहलक्ष्मी), पढ़ी-लिखी बहू, शक (लघुकथा-वनिता), घरेलू हिंसा कानून सास-बहू दोनों के लिए (निबंध सरिता), आत्महत्याः किसी समस्या का हल नहीं (निबंध-सुमन सौरभ), हिन्दी ही नहीं अंग्रेजी भी है अनिवार्य (निबंध-सुमन सौरभः, अब और नहीं, बलिदान, अनाम रिश्ता (कहानी-सरिता), पुरुष नसबंदी भी है जरूरी (निबंध-गृहशोभा), सुनहरे पल (कहानी-वनिता), सांझा संग्रह (लघुकथा-दीप देहरी पर तथा कविता-काव्य अंकुर)
पुरस्कार-गृहशोभा के फेसबुक पेज पर ''ऑनलाइन कविजयी सम्मेलन'' में पुरस्कृत दो कविताओं (क्यों छली जाती हो तुम तथा कैसे कहें नववर्ष है आया) का प्रसारण।
सम्मान-वनिता कहानी प्रतियोगिता में मेरी कहानी ''सुनहरे पल'' को सांत्वना पुरस्कार।
गृहलक्ष्मी के मार्च 2018 अंक में ''फैन ऑफ द मंथ'' का सम्मान।
संपादन-''रिश्तों के अंकुर'' महिला लेखिकाओं की कहानियों से सुसज्जित कहानी संग्रह।
लेखन का उद्देश्य-आत्मिक संतुष्टि एवं अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं का हौंसला बढ़ाना।

सूना जीवन

घर सूना आंगन सूना...
सूनी ये यह जिंदगानी...
याद आ रही फिर से
मुझको बचपन की वो कहानी

गौरैये के तृण नीड में जब
चूजों ने पर फैलाया था,
हुलस हुलस कर उड़ने लगे थे सब
पर, माँ ने बढ़कर रोका था...

साथी पाकर उड़ गए सब
जैसे एक बटोही हो...
मां की आंखे पथरा गई अब
लेकिन बेबस हो गई वो

अपने जीवन रज से जिसको
सींच सींच कर बड़ा किया
सैकड़ों कांटों से उसने
मन को मेरे घायल किया

मेरे उर्वर कोख से
तुम सब ने पाया नवजीवन
फिर क्यूँ आज अकेली हूं मैं,
क्यूँ है मेरा सूना जीवन...

डॉ. लता अग्रवाल

जन्मतिथि- 26/11/1966, शोलापुर महाराष्ट्र
वर्तमान पता- 73 यश विला, भवानी धाम फेस-1, नरेला शंकरी, भोपाल-462041 मध्यप्रदेश
मोबाइल/व्हाट्सएप-09926481878
शिक्षा-एमए अर्थशास्त्र, एमए हिंदी, एमएड, पीएचडी (हिंदी)
कार्यक्षेत्र- शिक्षा एवं लेखन
सामाजिक क्षेत्र-कई साहित्यिक, सामाजिक संस्था में सक्रिय भागीदारी।
विधा-कविता, कथा, लघुकथा, हायकू, उपन्यास, बाल साहित्य आदि।
प्रकाशन-शिक्षा एवं साहित्य पर 50 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन।
सम्मान-3 अंतरराष्ट्रीय सम्मान। 27 राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय सम्मान।
अन्य उपलब्धियाँ-बरगद पर 131 कविता विश्व रिकार्ड में, माँ पर 111 कविता, पिता पर निज लेखन से 1111 कविता प्रकाशन में। मध्यप्रदेश शिक्षा में पाठ चयन, भोज विवि में पाठयपुस्तक, म.प्र. शासन से निजी वि.वि. की बोर्ड मेम्बर।
लेखन का उद्देश्य-स्वांतः सुखाय

तार होते रिश्ते

''रोको! रोको! ये क्या हो रहा है यहाँ हां?'' विवाह समारोह में बाल एवं महिला आयोग की अध्यक्ष ने दल-बल सहित पहुंचकर समारोह में खलल उत्पन्न किया।

'आप को कहा मतरब जी और यहाँ काहे आई हैं?

कौन हैं आप?''

''हम बाल एवं महिला आयोग से हैं।'' इतना सुनते ही विवाह की बेदी पर बैठा पंडित चुपचाप खिसक लिया। ''जानते नहीं आप गैर कानूनी काम कर रहे हैं, यहाँ जितने लोग शामिल हैं सब हवालात की हवा खाएंगे समझे।''

सुनते ही धीरे-धीरे सभी मेहमान भी वहां से रफूचक्कर हो गए।

''और तुम दुल्हे मियाँ कहाँ हैं तुम्हारे माँ-बाप हाँ, कितनी उम्र है तुम्हारी?''

''सरजी! मेरा बेटा बालिग़ है सरजी वो नौकरी करता है सरकारी दफ्तर में बाबू है।''

''हुम्म! सरकारी नौकरी में होकर नाबालिग से ब्याह कर रहा है, नौकरी से हाथ दो बैठेगा समझे।''

''नहीं सरजी हम तो जे चले हमें नहीं करना ऐसी छोरी से ब्याह की ससुरी नौकरी ही चली जाए।''

''अब बताओ लड़की के माँ बाप कहाँ है?'' अध्यक्ष बोली।

''माई-बाप हम हैं, रमुआ की माय। साहबजी! रोक लियो उन लोगन कू, बियाह हो जान देओ फिर जो तुम केहो हम सब करिहें। बस इक बार हमई रमुआ बिदा हो जाए।''

''हमें सूचना मिली है लड़की नाबालिग है, क्या उम्र है लड़की की?''

''माई बाप ग्यारह बरस की है हमई रमुआ, ओ! हम जानत है कौन ससुरा आग लगाये रहा।''

''ये सब छोड़ो, बताओ क्या तुम्हें नहीं पता नाबालिग लड़की का ब्याह करने के जुर्म में तुम्हें जेल हो सकती है।''

''जानत है माई बाप, ई गलत है, मगर हम हाथ जोड़ के रए हो जान्दो बियाह फिर हम खुद ई चल दे हैं तुमाये संग जेल में। रोज की मार से तो बच जै हैं.''

''कैसी माँ हो अपनी बेटी को नरक में धकेल कर रह रही हो जेल चल देंगे। इस उम्र में उसका शरीर किसी पुरुष के संसर्ग को झेलने की स्थिति में नहीं है। वह बीमार हो सकती है, फिर कम उम्र में बच्चा होने से मर भी सकती है।''

''सबै मंजूर है साहबजी बस बियाह हो जाने देओ।''

''कैसी माँ है यह, एक ही रट लगाये बैठी है ब्याह हो जाने दो...?'' अध्यक्ष ने अपने साथी से कहा।

''माँ हूँ याई सू तो के रइ हूँ।''

''मतलब।''

''माई बाप! मैं अपनी छोरी को उके बाप से बचा न पा रइ।''

आभा सिंह

जन्मतिथि-6 नवम्बर 1944 बदायूँ, उप्र
शिक्षा-एमए, बीएड
सम्प्रति-स्वतंत्र लेखन
सम्पर्क-मकान नं. 80/173, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर 302020 (राज.)
मो.-09928494119, 08829059234
ईमेल-abhasingh1944@gmail.com
विधा-कहानी, कविता, लघुकथा
प्रकाशित कृतियाँ-मौलिक-कोने का आकाश, अब तो सुलग गए गुलमोहर, परछाइयों के अक्स, टुकड़ा टुकड़ा इन्द्रधनुष (कहानी संग्रह) अस्तित्व का हठ, भोर गंध (कविता संग्रह) माटी कहे (लघुकथा संग्रह)
सम्पादित संग्रहों में प्रकाशित-चन्दन वन की गंध नदी, कविता अनवरत-2016-17, आधुनिक हिन्दी साहित्य की कविताएं, हिन्दी की चर्चित कवयित्रियाँ, नारी चेतना की आवाज़।
बीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियाँ खंड-6 बूँद बूँद सागर, लघुकथा अनवरत-2016-17 राजस्थान की महिला लघुकथाकार, राजस्थान के लघुकथाकार, महामानव, दृष्टि इत्यादि
जर्मन लेखिका श्रीमती युट्टा आस्टिन द्वारा लंदन में हिन्दी शिक्षण के लिए-माटी कहे-कहे की लघुकथाओं का प्रयोग।
शिक्षक श्री हजारी राम बागाणी, भोजासर-जोधपुर द्वारा माटी कहे संग्रह की लघुकथाओं का कक्षा में उदाहरण के लिए उपयोग।
पुरस्कार व सम्मान-साहित्य संगम इन्दौर 1980 लघुकथा अभिशप्ता, कहानी बदरंग कैनवास 2014, कविता मैं माँ हूँ नए जमाने की 2014, कहानी अपने-पराये 2014, कहानी-अँधेरी आँखों के उजाले 2017, कहानी-बिजूका 2018
सतत रचनाशील रचनाकार सम्मान, दिल्ली, अखिल भारतीय डॉ. कुमुद टिक्कू प्रतियोगिताओं में स्पंदन सम्मान, जयपुर, अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान, अलवर, शब्द निष्ठा सम्मान, सरवाड़ अजमेर देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारण
विदेश यात्रा-अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, भूटान।
उद्देश्य-रचना कर्म से समाज के वैचारिक विकास में योगदान

औरत

औरत
शुलगायेगी चूल्हा
और
एक आग
भड़काएगी सीने में
ग़ैरत और ख़ुद्दारी की,
पकाएगी दाल
गलाएगी
दुनियाँ की तमाम
सड़ी गली रीतियाँ
पोयेगी रोटियाँ
साथ ही
घनी ममता से
थेपेगी अपने सपने
मसालदानी में दुबके
मसालों के सभी रंग
शिद्दत से
बुरकायेगी ज़िदंगी में,
फिर बड़ी चाहत से
परोसेगी भोजन
और दे देगी
स्वाद आज़ादी का
यों सिखाएगी
वह नई पीढ़ी को
सिर उठाकर
जीना मरना।

सुश्री रमादेवी तेकाम

साहित्यिक उपनाम-रमा प्रेम-शांति
जन्मतिथि- 05 जुलाई
वर्तमान पता- बालाघाट मप्र
मोबाइल नंबर-8458932800
शिक्षा-एमए (हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र) बीटीआई।
कार्यक्षेत्र- शिक्षिका
सामाजिक क्षेत्र-असहाय की मदद, गरीब बच्चों की शिक्षा हेतु सहयोग।
विधा-कविता, गीत, ग़ज़ल, लघुकथा, संस्मरण, आलेख।
सम्मान-अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर तक प्राप्त।
अन्य उपलब्धियाँ-खेल राष्ट्रीय स्तर, शिक्षा, सांस्कृतिक
लेखन का उद्देश्य-समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करना।

भारतीय नारी की दशा

आज भी देश की
अधिकांश नारी
आजाद नहीं हैं
ले ले वो स्वयं
निर्णय
उसको यह
अधिकार नहीं हैं
कहीं नारी स्वयं ना बढ़े
कहीं नारी ही
सब पर भारी हैं
ये मेरे देश भारत की
सच्ची नारी दशा
आज भी है।
नारी तो नारी होती
इसकी इज्जत भी
एक सी होती
लेकिन इसको भी
जाति-पाति, छोटे-बड़े
धर्म-समाज में बाँट दिए हैं
मासूम, नादान, गरीब
बच्ची की भी इज्जत
लूट कर खूनी खेल, खेल रहे हैं
डरा धमका कर
माँ बाप को भी
मारने की धमकी दे रहे हैं
जबकि नारी नहीं हैं कहीं कमजोर
आज की नारी
आसमान में अपनी
मेहनत और लगन से
उड़ रही है और
हर क्षेत्र में बढ़ रही है
लेकिन अपने ही देश की
धरा पर वो रमा-
पल-पल में डर रही हैं।

पूनम आनंद

जन्मतिथि- 4/1/1970, बिहटा (बिहार)
शिक्षा-एमए (द्वय) भोजन पोषण में प्रमाण पत्र
कार्यक्षेत्र- गृहणी
सामाजिक क्षेत्र-समाजसेवी
विधा-कहानी, कविता, हायकू, ताँका इत्यादि।
मोबाइल-09835265651
सम्मान-प्रखर मेघा सम्मान, अखंड गहमरी, हायकु सम्मान आदि अनेक सम्मान।
प्रकाशित पुस्तक-एकल संग्रह कहानी पाठ
साझा संग्रह-अनेकानेक
उपलब्धि-विभिन्न पत्र-पत्रिका में निरंतर प्रकाशन। आकाशवाणी पटना से निरंतर कथापाठ प्रसारण, नारी जगत पटना, डीडी पटना से काव्य पाठ.
लेखन का उद्देश्य-हमारे लेखन से किसी एक का भी जीवन सुधर जाए तो, जीवन सार्थक है।

जश्न आजादी

भारत माता के आँचल तले
देशप्रेम की गाँठ बाँध ले
बहुत सहा है, अब और न सहेंगे
जीवन पथ पर डटे रहेंगे
राहें भले कठिन हो, लेकिन
अपने बल पर ही खुद हम बढ़ेंगे
जल-थल हो या खुला हो नभ
ढूँढ कर दुश्मन खदेड़ भगाएंगे
आन-शान की बात कहीं हो तो
माटी को लहू से भीगा हम देंगे
देश रक्षा का है वचन निभाना
माँ के दूध की लाज बचाना
बहनों की राखी का मान बढ़ाना
भारत भू का जर्रर है प्यारा
देशभक्त है कसमें माटी के खाते
माथे तिरंगा लपेट हम रखते
वतन सुरक्षा का मुकुट हमारा
है सब दौलत से प्यारा
कहते है शख्स कदम से कदम मिलाने वाले
वीर सपूतों ने शान से लहराया तिरंगा
मौत का तांडव सर पर नचाकर
तान कर सीना चलते प्रहरी
विजयी होने का शंखनाद सुनकर
वंदे मातरम् का जयघोष करते
हिन्दुस्तान की हर बात निराली
दाँतों अँगुली कटवा है देती
जब यह सब देख देखकर
गोदी का बच्चा भी बोल आऐ पड़ता
जज्बातों की दौलत में से
देशभक्ति का खजाना कम न पड़ेगा
वीरों शहीदों के इस धरा पर
हरेक घर में सैनिक ही पैदा होगा।
ऐ वतन हमें तो नाज है तुम पर
तुम भी हम पर नाज करो।
जश्ने आजादी हम खुलकर मनाएंगे।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

पता-भारतीय स्टेट बैंक के सामने, माखननगर-बाबई जिला होशंगाबाद
मो.-7566948452
ई मेल-keerti1408@gmail.com
तहसील संयोजक-अखिल भारतीय साहित्य परिषद्
प्रभात साहित्य परिषद्

उपलब्धि-जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में भोपाल जिले का प्रथम पुरस्कार हिन्दी दिवस निबंध प्रतियोगिता बीएचईएल द्वारा लगातार तीन वर्ष तक प्रथम पुरस्कार महिला एवं बाल विकास की एकल कला प्रदर्शनी का पुरस्कार, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से वाचन।

प्रकाशन-विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व साझा संकलनों में कविता कहानी, लेख, व्यंग आदि का निरंतर प्रकाशन

विभिन्न अखिल भारतीय मंचों से काव्य पाठ अनेक सामाजिक संस्थाओं, गौ सेवा, पर्यावरण, वृक्षारोपण आदि कार्यक्रमों में सक्रिय योगदान

सम्मान-काव्य कोकिला सम्मान, मनु तुलसी स्मृति समन, शब्द शक्ति सम्मान, वुमन्स एम्पावर्ड अवार्ड, हिंदी सागर सम्मान, शब्द सुगंध सम्मान, अन्तरा-शब्दशक्ति-2018, भाषा सारथी सम्मान तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मान।

महिला दिवस

कार्येषु मंत्री है तू,
मैं हूं तेरा राजा!!!
कर्णेषु दासी है तू,
घर है मेरी सत्ता!!!
भोजयेषु माता है तू
तू रह गई भूखी नहीं पता!!!
शयनेशु रम्भा है तू,
क्या तेरी मर्जी नहीं पता!!!
तू धर्मानुकूला रह,
मैं पंछी उन्मुक्त गगन का!!!
तू क्षमा वान धारित्री सी
मेरे पापों को नहीं गिना!!
आज दिवस इक तेरा है!!!
तू महिला दिवस खूब मना!!
तू महिला दिवस खूब मना!

अर्पणा संत सिंह

जन्मतिथि- 22/08/78
जन्म स्थान- जमशेदपु
मो.-9470359224
शिक्षा-स्नातक विज्ञान, इंजीनियरिंग इन कम्प्यूटर साइंस, स्नातकोत्तर हिन्दी में
कार्यक्षेत्र- गृहिणी
सामाजिक क्षेत्र-जीवन नाम संस्था से जुड़ी हूँ
विधा-छंद, ग़ज़ल, शेर, कविता, लेख
ईमेल-arpana.arpana.singh@gmail. com
प्रकाशन-कविताएँ व लेखों का समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशन
लेखन का उद्देश्य-जो मैं अपने समाज और देश के प्रति महसूस करती हूँ उन एहसासों और जज्बातों को पाठकों तक पहुंचाना चाहती हूँ।

तू कुछ खुदा सा है

मेरे इश्क
इश्क तुझसे बेशुमार किया
जब से इश्क किया
तब से तू ही तू रहा
मेरे दिल में
धड़कन में
ख्याल में
ख्वाहिश में
ख्वाब में
जितना रूबरू दुनिया से हुई
और जितने करीब तुझसे हुई
नाज है कि तू मेरा इश्क है
मेरा इश्क अब इश्क न रहा
बन गया है अब यह इबादत
क्योंकि मेरा इश्क
इश्क सा नहीं
यह कुछ-कुछ खुदा सा हैं
उसके दिल में है सारी कायनात ए मोहब्बत
पाक से दिल में हैं नूर ए इंसानियत
जिसमें फिक्र है सारी दुनिया की
जिसके जिक्र से नाज से भर जाएं
मेरे इश्क
इस कदर तुझ पर यकीन हो चला
खुद पर भी अब यकीन न रहा
तू ही दिल ए सुकूं
तू ही रुह ए नूर
मेरे वजूद का कतरा-कतरा तुझ पर फना
मेरा इश्क अब इश्क न रहा
बन गया है अब यह इबादत
क्योंकि मेरा इश्क
इश्क सा नहीं
यह कुछ-कुछ खुदा सा है।

रागिनी शर्मा

जन्मतिथि- 1 मई 1972
जन्म स्थान- बेगमगंज जिला रायसेन संभाग भोपाल मप्र
शिक्षा-बीएससी, एमए हिंदी साहित्य, एमए, इंग्लिश लिट
एमएड वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास पर शोध कार्य
कार्यक्षेत्र- व्याख्याता शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिला धार
सामाजिक क्षेत्र-समाजसेवा, साहित्य सेवा
विधा-गीत, ग़ज़ल, मुक्तक
ईमेल-ragini1572@gmail.com
ब्लॉग-रागिनी शर्मा एक अभिव्यक्ति
प्रकाशन-स्कूल लाइफ से ही दैनिक भास्कर भोपाल, मधुरिमा, दैनिक जागरण, नई दुनिया, देशबंधु आदि पेपर में मेरी रचनाएँ प्रकाशित हुई। कुछ स्थानीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन-संकल्प, वार्षिक पत्रिका का सम्पादन 7 वर्षों से।
मंच संचालन-सतत् जारी है, कविता पाठ स्थानीय एवं जिला स्तरीय मंचों से स्कूल लाइफ में ही किए हैं, साहित्यिक गोष्ठियों में शामिल होती रहती हूं।
अभिनय-एक एड फिल्म में काम किया साक्षरता पर
लेखन का उद्देश्य-सकारात्मक विचारों को विस्तार देना, आसपास खुशहाल और सकारात्मक वातावरण उत्पन्न कर जिंदगी के हर क्षण को जीवंत बनाना, जीवटता के साथ जीना और दूसरों को भी जिंदादिली से जीने के लिए प्रेरित करना, जीवन के प्रति आस्था रखना और दूसरों के लिए भी इस हेतु प्रेरित करना।

मक्कारियाँ नहीं पूजी जाती कहीं

यादों का ही सिलसिला रह गया
कहा भी बहुत अनकहा रह गया

हाथ ही वो मिलाते रहे बार-बार
हकीकत दिलों में फासला रह गया

आंखों में तुम ही मुस्कुराते रहे
आईना ये भेद खोलता रह गया

आंधियां देखकर ये हैरान है
दीप हवाओं में कैसे जल रहा गया

मक्कारियाँ नहीं पूजी जातीं कहीं
परिश्रम से बुलंद हौंसला यह रह गया।

बीना शर्मा

उपनाम (तख़ल्लुस) 'झंकार'
जन्म स्थान- अलीगढ़
कार्यक्षेत्र-गृहिणी
पता- श्री बीना लोकेश शर्मा सीनियर मैनेजर, इलेक्ट्रिक जे.के.के. लक्ष्मी सीमेंट सिरोही
फोन नं.-9799904433
ईमेल-beenabhardwaj0619@gmail. com
शिक्षा-एमए, बीएड, एमए-Drawing & panting (Fine art)
व्यवसाय-गृहणी
प्रकाशन विवरण-कुछ सांझा काव्य संकलन 'एक पृष्ठ मेरा भी'', साहित्य संगम सांझा संलन, सहोदरी सोपान-3 सांझा संकलन, ग़ज़ल इक जिज्ञासा, जिज्ञासा काव्य मंच, सांझा संकलन
काव्य पाठ-जीवंत मंच पर काव्य पाठ की कुछ प्रस्तुतियाँ (राष्ट्रीय कवि संगम माउंट आबू, ग़ज़ल इक जिज्ञासा विमोचन समारोह भोपाल)
अन्य उपलब्धियाँ- आपसे साथियों का एवं सुधि पाठकों का साथ, सानिध्य, अपनत्व, सहयोग ही मेरी उपलब्धियाँ ही नहीं ताकत और पारितोषिक है।।
लेखन का उद्देश्य-कब...? क्यूँ...? कैसे.../चल पड़ी इस साहित्यिक यात्रा पर आज तक स्वयं न जान सकी बस आत्मसंतुष्टि था...मगर आज तारीख में जीने की तमाम वज़हों में से एक।

बाल विवाह अभिशाप है

बाल विवाह अभिशाप है,
मुझको बंधन में न बांधो।
कुछ समझो-सोच विचारों,
बाल विवाह अभिशाप है।।
नन्हीं कली खिली नहीं,
फूल अभी वो बनी नहीं,
छोटी उम्र छोटे से सपने,
बाबा इनको न उजाड़ों,
कुछ समझो-सोच विचारों,
बाल विवाह...
जीवन जीना चाहती हूँ मैं,
थोड़ा पढ़ना चाहती हूँ मैं,
अच्छा बुरा मैं क्या जानूँ,
भला बुरा न मैं पहचानूँ,
बाबा तनिक सोच विचारों।
बाल विवाह...
नाजुक से कंधे हैं मेरे,
भारी से ये फंदे घेरे,
मैं तो कोई गाय नहीं हूँ,
गैर के खूँटे से न बाँधो,
मेरी ओर तनिक निहारो।
बाल विवाह...
अभी-अभी तो पंख उगे हैं,
जीव के कब स्वाद चखे हैं,
नभ के पंछी मुझे बुलाते,
उड़ने का न्यौता दे जाते,
बाबा तुम मेरे पंख सँवारो।
बाल विवाह...

प्रज्ञा जायसवाल

शिक्षा-एम कॉम, पीजीडीसीए, बीएड
कार्यक्षेत्र-शिक्षिका
विधा-गीत, ग़ज़ल, कविता, लेख
सम्मान-शब्द शक्ति सम्मान, प्रस्फुटन द्वारा, नारी सम्मान, राष्ट्रीय कवि संगम द्वारा सम्मानित, अंतरा ने नई पहचान दी, साथ ही फेसबुक से जुड़े विभिन्न साहित्यिक समूहों से सम्मानित होती रहती हूँ...
प्रकाशन-अंतरा लोकजंग, नगर कथा न्यूज पेपर, सर्जन, शब्द, ध्वज, डॉ. सुधा मलैयाजी द्वारा सम्पादित पत्रिका ओजस्विनी में, हे कल्याणी, जायसवाल स्मारिका एवं अनेक साँझा संग्रह व राष्ट्रीय पत्रिका में, रचनाएं प्रकाशित होती है।
संपर्क-बाबू रामप्रसाद जायसवाल वार्ड, तहसील सोहागपुर, जिला होशंगाबाद, मप्र, पिन-461771
लेखन का उद्देश्य-ईश्वर का आशीष और परम मित्रों का सहयोगी स्नेह, बचपन से गीत, ग़ज़ल, कविता, कहानी, पढ़ने की रुचि ने मुझे लेखनी से जोड़ा, जो कि आज मेरी मित्र बन गई है।

माँ नर्मदा

सज गयी है
ये धरा दुल्हन सी
जयंती के उपलक्ष्य में
श्वेत चूनर रंग गयी है
पुष्प दीपक माल से
क्या खूब सूरत है
नज़ारा आज तेरे द्वार का
खड़े वो पुष्प माल भोग
ले हाथ जोड़ करे वंदना
डूबा भक्ति में नगर
है आज चौराहा सजा
जयंती माँ नर्मदा की
उत्सव सा माहौल बना
जल मंच पर बैठ
महंत गुणी कर रहे
अभिषेक है
बज रहे वो शंख घंटे
मंगलाचरण के गान है
भजनों से गूंजित समा
सजा आरती का थाल है
कर रहे वो वंदना
ले पुष्प हाथ आराधना
माँ नर्मदा स्वीकार लो
अपने भक्तों की
ये प्रार्थना...

अदिति रुसिया

जन्मतिथि- 16/4/72, जबलपुर
शिक्षा-बीए (पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)
कार्य क्षेत्र-गृहणी
ईमेल-aditirusia@gmail.com
प्रकाशन-जीवन की धूप छांव (काव्य संग्रह)
अनेक साझा संग्रहों व पत्र-पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित
सम्मान-मैथलीशरण गुप्त स्मृति सम्मान, वारासिवनी
अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान 2018, भाषा सारथी सम्मान
लेखन का उद्देश्य-अपने विचारों को लोगो तक पहुँचाना

प्रार्थना

मेरे प्रभु है प्रार्थना यही तुमसे
रहे हाथ तुम्हारा सदा सर पे
कभी भूल भी न दुखाऊँ
दिल मैं किसी अपने का
न हो कोई दुखी मुझसे
रहे सदा ही मेरे अपने ख़ुशहाल
न टूटे कभी किसी का घर बार
जब भी करूँ मैं तेरी अर्चना
ऐ श्याम देना बस यही की
जब तक हूँ इस जहाँ में
हर हाल में रहूँ मैं ख़ुश सदा
चाहे आँधी आए या आए तूफ़ाँ
न मेरे क़दम डगमगाएँ कभी
गर उठे मेरे हाथ तो बस किसी
दुआ के लिए न फैलाऊँ कभी हाथ
सामने किसी के माँगने के लिए
बिन माँगे तो सब कुछ दिया तुमने
और क्या माँगू तुमसे ऐ श्याम
देना है तो बस इतना देना
गर की हो सच्ची सेवा तेरी
तो पाऊँ तेरे ही चरणओं में वास।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर- .....

नाम-.....

पिता का नाम-.....

पता-.....

.....

संपर्क-.....

व्हाट्सअप-.....

अणुडाक (ईमेल)-.....

एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

कार्यालय -
एस-२०७, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग,
इंदौर (मध्यप्रदेश) ४५२००१

संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४९५, (दू.) ९१७ ४४५५ ४५५
७०४९५७७४५५ । ९४२४७६५२५९
अणुडाक- womenaawaz@gmail.com
अंतरताना- www.womenaawaz.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
११ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com